RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

वर्ष : 15	अंक : 12	मुम्बई, मार्च 2026	पृष्ठ : 32	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 15	ISSUE : 12	MUMBAI, MARCH 2026	PAGES : 32	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

तीर्थंकर श्री 1008 महावीर भगवान, करन्दई बसदी, जिला थिरूवन्नामलई, तमिलनाडू

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 15 अंक 12 मार्च 2026

संपादक मंडल

प्रधान संपादक

डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

संपादक

श्री उमानाथ रामअजोर दुबे

संपादकीय सलाहकार

डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली

डॉ. अनेकांत जैन, दिल्ली

श्री राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

कार्यालय

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.

फोन :

E-mail : tirthvandana4@gmail.com

Website : tirthkshetracommittee.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 00121010110008627 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

वीर निर्वाण संवत् 2552

इस अंक में

भगवान् महावीर होने का अर्थ	7
भगवान महावीर स्वामी के अपरिग्रहवाद का लोकव्यापी महत्त्व	9
शाकाहार की गरिमा बचाने का समय	10
भारत' नाम के ऐतिहासिक सत्य पर गूंजा आभासी मंच -	11
जैन साहित्य और संस्कृति की समृद्ध परम्परा : इसका इतिहास संजोने की आवश्यकता	12
धार स्थित भोजशाला जैन धार्मिक विरासत और संस्कृति को बचाने के लिए	15
संस्कृति के आद्य प्रवर्तक – तीर्थंकर ऋषभदेव	17
जनगणना के समय धर्म के कॉलम में केवल 'जैन' ही लिखना	26
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की तीर्थ चक्रवर्ती योजना	28

"जैन तीर्थवंदना" पत्रिका अब डिजिटल: सीधे आपके मोबाइल पर

माननीय सभी तीर्थप्रेमी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा प्रतिमाह प्रकाशित की जाने वाली **"जैन तीर्थवंदना"** पत्रिका **अप्रैल 2026 से डिजिटल माध्यम (मोबाइल/व्हाट्सऐप) से प्रेषित की जाएगी।** कृपया आप अपना **पूरा नाम एवं सही मोबाइल नंबर 15 मार्च 2026** तक कमेटी कार्यालय में अवश्य जाँच/सुधार करवा लें, ताकि प्रत्येक माह "जैन *तीर्थवंदना*" पत्रिका आपको **समय पर नियमित रूप से** प्राप्त होती रहे।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

दूसरा तल, हीराबाग, सी.पी. टैंक, मुंबई- ४००००४,

संपर्क सूत्र - 9833671770, 9109228683, 7078548210, 7217756871

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।

2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।

3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

महावीर जयन्ती: संस्कृति रक्षा के संकल्प का अवसर

आगामी चैत्र शुक्ल त्रयोदशी यानी 30 मार्च 2026 को विश्व वन्द्य तीर्थंकर महावीर का जन्म कल्याणक महोत्सव है। इसे जन-जन में महावीर जयन्ती के नाम से मनाने का चलन है। भारत सरकार एवं राज्य सरकारें भी इसी नाम से अवकाश घोषित करती हैं एवं प्रभु महावीर के प्रति अपने श्रद्धा सुमन समर्पित करती हैं। जहॉ-जहॉ जैन बन्धु निवास करते हैं, दिगम्बर हो या श्वेताम्बर, सभी इस दिन अपने-अपने व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद रखकर शोभायात्रा में सम्मिलित होकर अपनी भक्ति एवं उल्लास को व्यक्त करते हैं किन्तु मेरा आग्रह है कि केवल इतना करना ही पर्याप्त नहीं है। भगवान महावीर के काल में भी हिंसा एवं अधर्म का बोल-बाला हो गया था। धर्म के नाम पर यज्ञों में पशुबलि दी जा रही थी ऐसे समय में महावीर ने अहिंसा धर्म का उपदेश देकर लाखों-करोड़ों निरपराध प्राणियों को जीवनदान दिलाया, उनकी रक्षा की। उनके उपदेशों से ऋषभदेव आदि पूर्ववर्ती 23 तीर्थंकरों द्वारा उपदिष्ट धर्म पुनः प्रवर्तमान हुआ। जो भगवान पार्श्वनाथ के उपदेश थे वही भगवान महावीर के, मात्र अन्तर था तो शैली का, विवेचनों का, सन्दर्भों का।

मैं अपने साधर्मी बन्धुओं/बहनों से अनुरोध करता हूं कि आपने चैत्र कृष्ण नवमी (12.03.26) को ऋषभ जयन्ती मनाई होगी। अनेक स्थानों पर झलक जैन संस्कृति: आदिनाथ से महावीर के कार्यक्रमों की श्रृंखला चल रही होगी। कहीं प्रभात फेरी, कहीं पूजन-विधान, कहीं आरती/भजन, अनेक प्रकार की प्रतियोगितायें चल रही होगी यदि आप उनमें न भी सम्मिलित हो पा रहे हों तो महावीर जयन्ती पर कम से कम इतना तो जरूर करें कि: -

1. महावीर जयन्ती के उपलक्ष्य में निकट या दूर के किसी एक तीर्थ की सपरिवार यात्रा करें वहॉ कुछ समय बिताये वहॉ की अध्यात्मिक ऊर्जा का आनन्द ले। यह आपमें नई चेतना का संचार करेगा।

2. कोई न कोई जैन ग्रंथ/पुस्तक क्रय कर ऐसे साहित्य के प्रकाशनों को प्रोत्साहित करें।

3. किसी साधर्मी बन्धु/परिवार को शिक्षा/रोजगार के क्षेत्र में मदद करें। आर्थिक मदद दे सकते है तो वह बिना प्रदर्शन के देवें। जिससे पाने वाले के मन में साधर्मी प्रेम/आदर विकसित हो। यदि आर्थिक मदद न दे सकें तो मार्गदर्शन दे एवं उसे सक्षम/स्वावलम्बी बनाये। साधर्मी बन्धुओं के विकास में ही संस्कृति का विकास है।

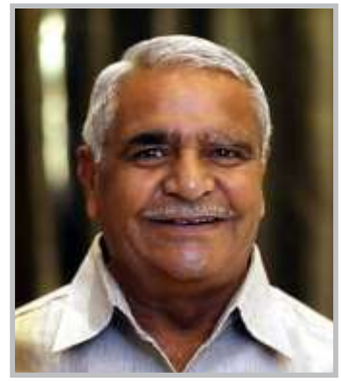

4. दिगम्बर जैन मुनि/आर्यिका के नगर या अंचल में आगमन के समय उनके श्रद्धापूर्वक दर्शन करने जरूर जायें। उनके दर्शन मात्र से ही बहुत प्रेरणा मिलती है।

5. स्थानीय मंदिर जी की व्यवस्था में सहयोगी बनें उन्हें सांस्कृतिक मिलन का केन्द्र बनायें। मन्दिर प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वन्दिता एवं संघर्ष के केन्द्र बनते जा रहे हैं जो उचित नहीं है। समाज के युवाओं को साथ लेकर बुजुर्गों के मार्गदर्शन में एक टीम बनाई जानी चाहिए जो मन्दिर को धार्मिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों का केन्द्र बनाये। हमारे सामने गुरुद्वारों की व्यवस्था है।

6. अभी-अभी संघ लोक सेवा आयोग के परिणाम आये है चयनित जैन भाई/बहनों को बधाई किन्तु यह भी ध्यान दे कि और कौन चुने गये हैं? हम संख्या बल में बहुत कम हैं अतः हमें अपनी ताकत इतर रूप से बढ़ानी है तभी हम संस्कृति की रक्षा कर पायेंगे।

7. जनगणना का काम अप्रैल-26 से शुरू हो रहा है इसमें सजग रहना है **यह काम भी परोक्ष में संस्कृति रक्षा का ही काम है।**

महावीर जयन्ती की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से समस्त श्रद्धालु बंधुओं, मातृशक्ति एवं युवाओं को प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ जयंती तथा चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी जयंती के पावन पर्व की हार्दिक मंगलकामनाएँ।

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) जिनका जन्म कल्याणक जैन धर्म के पाँच प्रमुख कल्याणकों में से एक है जिसे हम अत्यंत श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाते हैं। यह माह दोनों तीर्थंकरों के जन्मकल्याणक का अवसर लाया है। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव भगवान जिन्होंने मानव समाज को सभ्यता, संस्कृति, श्रम, संयम और आध्यात्मिकता का मार्ग दिखाते हुए त्याग, तप एवं आत्मकल्याण की परंपरा प्रारंभ की, तो इसी दिव्य परंपरा को आगे बढ़ाते हुए 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर ने अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय और ब्रह्मचर्य जैसे महान सिद्धांतों के माध्यम से सम्पूर्ण मानवता को शांति, सहअस्तित्व और करुणा का संदेश दिया। इनके आदर्श हमें जीवन सिखाता है, आत्मसंयम, सहिष्णुता और सद्भाव से ही समाज में वास्तविक सुख और शांति स्थापित हो सकती है इसका प्रत्यक्ष दर्शन का बोध कराता है।

यह पावन अवसर पर हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम भगवान आदिनाथ और भगवान महावीर के आदर्शों को केवल स्मरण ही न करें, बल्कि उन्हें अपने जीवन में उतारने का संकल्प भी लें। अहिंसा, दया, करुणा और सत्य के मार्ग पर चलकर ही हम एक श्रेष्ठ, नैतिक और समरस समाज का निर्माण कर सकते हैं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी सदैव धर्म, संस्कृति और तीर्थों की गरिमा को बनाए रखने तथा समाज में आध्यात्मिक जागृति फैलाने के लिए प्रतिबद्ध रही है। हमें विश्वास है कि आप सभी के सहयोग से हम इन महान आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाने में सफल होंगे।

आइए, इस पावन अवसर पर हम सब मिलकर भगवान आदिनाथ और भगवान महावीर के दिव्य संदेशों को अपने जीवन का मार्गदर्शन बनाएं और समाज में अहिंसा, सद्भावना तथा धर्म की ज्योति को और अधिक प्रज्वलित करें।

आप सभी को भगवान आदिनाथ जयंती एवं भगवान महावीर जयंती की पुनः हार्दिक शुभकामनाएँ।

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

इतिहास का संकलन एवं अभिलेखीकरण

भगवान महावीर जन्म कल्याणक अथवा महावीर जयन्ती के पावन अवसर पर आप सबको बधाई। हमारे पूर्वाचार्यों ने इतिहास को संरक्षित करते हुए पुराणों एवं अन्यत्र लिख दिया कि चैत्र शुक्ल त्रयोदशी 599 ई. पू. में भगवान महावीर का जन्म हुआ। फलतः हम इसे इसी तिथि को मना रहे हैं। इस वर्ष यह तिथि 30.3.26 को आ रही है। भारत सरकार तथा राज्य सरकारें भी महावीर जयन्ती को शासकीय अवकाश घोषित कर विश्ववन्द्य महामना भगवान महावीर के प्रति अपने श्रद्धा सुमन समर्पित कर रही हैं।

मैं पहले भी लिख चुका हूं किः -

जो इतिहास नहीं पढ़ते वे इतिहास नहीं बनाते।

हमारे परम पावन तीर्थों के इतिहास को जानना, उसको संरक्षित करना एवं प्रचारित-प्रसारित करना अत्यन्त आवश्यक है। इतिहास को समीचीन रूप से लिपिबद्ध न करने के कारण ही आज भगवान महावीर की जन्मभूमि 'कुण्डलपुर' के बारे में विवाद हो रहा है। मात्र जन्मभूमि ही नहीं निर्वाणभूमि 'पावापुरी' को भी संदेह के घेरे में ले लिया गया है। सौभाग्य से वर्तमान में अनेक साहित्यिक, कुछ पुरातात्विक एवं दिगम्बर जैन समाज की अविरल प्राचीन परम्परा हमें उपलब्ध है। इसके आधार पर हम अपने तीर्थों की पहचान कर पाये हैं। भविष्य में कोई विसंगति न पनपे एतदर्थ सघन, सक्षम प्रयास जरूरी हैं। शोधपूर्ण प्रमाणिक प्रकाशन एवं शिलालेखों का सृजन भी जरूरी है।

भगवान महावीर के 2500 वें निर्वाण महोत्सव के सन्दर्भ में भारतीय ज्ञानपीठ -दिल्ली के सहयोग से भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने 1974 - 1988 के मध्य पं. बलभद्र जी के प्रयासों एवं निर्देशन में भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ पुस्तक 5 भागों में प्रकाशित की थी। इस पुस्तक में देश के सभी तीर्थों को अंचल/प्रान्तवार विभाजित कर उनके इतिहास, पुरातात्विक महत्त्व, अवस्थिति, उपलब्ध सुविधाओं के बारे में प्रामाणिक एवं आवश्यक जानकारी दी गई है। लगभग 50 वर्षों के अन्तराल में इतिहास तो ज्यादा नहीं बदला अनेक स्थानों पर नवीन पुरावशेषों के मिलने से प्रामाणिकता जरूर बढ़ गई है। कुछ शिलालेख मिल गये हैं। नवीन साहित्यिक अनुसंधानों एवं साहित्यिक कृतियों के प्रकाशन से क्षेत्रों का इतिहास समृद्ध हुआ है। देश के विकास के साथ आवागमन के साधनों के बढ़ने से अब यात्रायें सुगम हो गई हैं। क्षेत्र पर आवास, भोजन, यातायात एवं संचार आदि की सुविधाओं में तो आमूल-चूल परिवर्तन हो गया है।

श्री हसमुख जैन गॉधी जी ने समर्पित भाव से 2004 से दि. जैन तीर्थ निर्देशिका के प्रकाशन का उपक्रम हस्तगत किया। हम जानते है कि हमारी समाज की उदासीनता के कारण हम लोगों को डाटा कलेक्शन में बहुत श्रम करना पड़ा है। 2004 से 2025 के 21-22 वर्षों में इसके 12 संस्करण तथा 1 लाख प्रतियों के प्रकाशन से जहॉ इसकी उपयोगिता प्रमाणित हुई वहीं हमें भी हर संस्करण में समय की मांग के अनुरूप संशोधन, परिवर्तन, परिवर्द्धन करने का अवसर मिला। आज इसका 12 हवॉ संस्करण (2025) बहुचर्चित है। लम्बी तीर्थ यात्रा पर जाने वाले प्रत्येक तीर्थ यात्री के लिए यह एक अनिवार्य आवश्यकता है।

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की स्थापना के 125 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। इस अवसर पर गठित शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष समारोह समिति ने भारत के दि. जैन तीर्थ पुस्तक के पुनर्लेखन की आवश्यकता को अनुभव कर बैठक का आयोजन कर विद्वानों से विचार विनिमय कर पुनर्लेखन एवं प्रकाशन की योजना बनाई है।

किन्तु अब काम थोडा सरल हो गया है। हमारी निर्देशिका से अच्छा आधार बना है। कोटा, दिल्ली, जयपुर आदि स्थानों से प्रकाशित अन्य पुस्तकों में समीपवर्ती नगरों आदि की भी अच्छी जानकारी है उनका सबका अध्ययन शुरू कर दिया है। हम सबका उपयोग करेंगे।

गत 25 फरवरी को सागर में सम्पन्न बैठक (विवरण इसी अंक में अन्दर प्रकाशित) में श्री जवाहरलाल जी जैन, श्री संतोष जैन, 'घड़ी' एवं श्री हसमुख जैन गॉधी, श्री मनोज बॉगेला आदि श्रेष्ठियों की उपस्थिति में विद्वानों की सहमति से विभिन्न प्रान्तों के तीर्थों के विवरणों के लेखन/सम्पादन के कार्य का निम्नवत् विभाजन किया गया है।

प्रो. अनुपम जैन, इन्दौर - प्रधान सम्पादक, 94250

53822

प्रो. नरेन्द्रकुमार जैन, टीकमगढ़ - लेखनकार्य, राजस्थान अंचल के तीर्थ

डॉ. सुनील कुमार जैन 'संचय', ललितपुर - उ.प्र. एवं उत्तरांचल के तीर्थ

श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद - म.प्र. एवं छत्तीसगढ़ के तीर्थ

डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन, भगवॉ - पूर्वांचल के समस्त प्रान्तों के तीर्थ

सागर बैठक का एक दृष्य, 25.02.26

श्री विजयकुमार जैन 'बाबाजी'-कर्नाटक, तमिलनाडु आदि दक्षिणांचल के सभी प्रान्तों के तीर्थ

गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, पाण्डिचेरी आदि प्रान्तों के तीर्थों हेतु लेखकों का निर्णय बाद में किया जायेगा। विभिन्न प्रान्तों हेतु 1-1 व्यक्ति का और चयन किया जाना है अतः हमारे पाठकों में से जो भी बन्धु तीर्थों के इतिहास लेखन में रूचि रखते हैं वे कृपया मुझसे अथवा अपने प्रान्त के लेखक बन्धु से सम्पर्क करें। हमें उनकी सेवायें प्राप्त कर प्रसन्नता होगी। तीर्थक्षेत्र कमेटी आवागमन की सुविधाओं की व्यवस्था में सहयोग करेगी।

हमारे पुनर्लेखन में पं. बलभद्र जी की पुस्तक एवं दि. जैन तीर्थ निर्देशिका मुख्य आधार रहेगी। अन्य उपलब्ध समस्त सामग्री का यथोचित उपयोग किया जायेगा।

हम इन खण्डों को 22.10.26 - 21.10.27 के मध्य प्रकाशित करना चाहते हैं। अतः तीर्थों के प्रबन्धकों से भी अनुरोध है कि वे अपने-अपने तीर्थों की उपलब्धियों एवं प्रकाशित साहित्य हमारे चयनित माननीय लेखकों को या मुझे उपलब्ध कराने का कष्ट करे।

चूंकि इन खण्डों को अब बहुरंगी Multi Colour छापना है। अतः क्षेत्र के मूलनायक, मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार, अग्रभाग, ड्रोन से लिया गया विहंगम दृष्य, प्राचीन शिलालेख आदि भी प्रकाशन हेतु आवष्यक होंगे। पुनः निवेदन है कि हमारे माननीय लेखकों या उनके सहयोगियों को सामग्री संकलन में सहयोग करें जिससे आपके तीर्थों का प्रामाणिक विवरण, पूर्णता के साथ तीर्थक्षेत्र कमेटी के खण्डों में प्रकाशित हो सके।

2026/2027 में प्रकाश्य इस पुस्तक में दिये गये विवरण आगामी दशकों में प्रमाण रहेंगे अतः केवल कालजयी सूचनायें एवं वर्तमान में उपलब्ध सुविधाओं की ही जानकारी देवे। अध्यक्ष/मंत्री के नामों की हमें जरूरत नहीं क्योंकि वे तो बदल जाते हैं। आपके तीर्थ की जानकारी देने वाली यदि कोई पुस्तक/पुस्तिका/फोल्डर यदि छपी हो तो उसकी प्रति भी अवश्य देवे। यदि आपके क्षेत्र के अतिशय के बारे में कोई बात प्रचलित है तो उसका भी लिखित विवरण (प्रकाशित) उपलब्ध करावें। प्रकाशित सामग्री के आधार पर ही हम अतिशय क्षेत्रों की सूची में क्षेत्र को सम्मिलित करेगें।

शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष के कार्यक्रमों की श्रृंखला में यह स्थायी महत्त्व का कार्य होगा। अतः समस्त अंचलों के पदाधिकारियों से भी अनुरोध है कि वे अपने-अपने आगामी भ्रमण कार्यक्रमों में इस योजना का प्रचार-प्रसार करे जिससे यह प्रकाशन अधिकाधिक उपयोगी एवं स्थायी महत्त्व का बन सके।

महावीर जयन्ती के पावन अवसर पर सभी तीर्थों पर विराजमान जिनबिम्बों तथा साधनारत पूज्य मुनिराजों को नमोस्तु करते हुए मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

भगवान् महावीर होने का अर्थ

- डॉ. अरिहन्त कुमार जैन, मुंबई

भारत के प्रथम गणतन्त्र 'वैशाली' के कुण्डग्राम में गणनायक राजा सिद्धार्थ व महारानी प्रियकारिणी त्रिशला के घर में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन बालक वर्धमान के रूप में उस पवित्र आत्मा ने जन्म लिया, जिन्हें वीर, अतिवीर, सन्मति और तीर्थंकर भगवान् महावीर नाम से भी जाना गया। ये केवल उनके जन्म से बड़े होने तक के नाम नहीं बल्कि उनकी क्रमशः उजागर होती चारित्रिक उपाधियाँ हैं, जिनसे उनके महान् व्यक्तित्व का परिचय होता है।

सामान्यतः महावीर शब्द को लोग बाहुबल से आँकते हैं। लेकिन तीर्थंकर महावीर के संदर्भ में 'महावीर' होना बाहुबल से केवल बाह्य संसार को जीतना नहीं वरन् स्वयं के आंतरिक संसार को जीतना है। क्योंकि शारीरिक बाहुबल शाश्वत नहीं, बल्कि सीमित होता है तथा समय और उम्र के साथ-साथ ढलता हुआ जन्म-मरण के चक्रव्यूह में झूलता रहता है, जबकि आंतरिक (आत्मा का) संसार जीतने वाले को साधन की आवश्यकता ही नहीं होती, वो तो भेद-विज्ञान के माध्यम से देह और आत्मा में भेद करके देह को नश्वर और आत्मा को अजर-अमर मानकर, वीतरागता को धारण कर, तप के माध्यम से समस्त कर्मों का नाश कर मोक्ष को प्राप्त करता है।

तीर्थंकर 'महावीर' होना, आत्मा में विकाररूप विद्यमान क्रोध- मान-माया-लोभ रूपी कषायों से अंतरयुद्ध लड़कर, सर्वप्रथम स्वयं पर विजय प्राप्त कर दया-करुणा-प्रेम और क्षमा को स्वयं में विकसित करना है। यह अहिंसक अंतरयुद्ध बिना वीतरागता के संभव नहीं। वीतरागता का अर्थ होता है समस्त राग-द्वेष/आसक्ति आदि का परित्याग। अतः विचार करने पर हम तीर्थंकर महावीर के महा+वीत+रागी होने को भी 'महावीर' कहने का आशय ग्रहण कर सकते हैं।

जन-जन के महावीर -

भगवान् महावीर भले ही जैनधर्म के २४वें तीर्थंकर हैं, परंतु महावीर के सार्वकालिक, सर्व कल्याणकारी, सर्वोदयी और शाश्वत सिद्धांत उन्हें जनधर्म का प्रणेता प्रस्तुत करते हैं। भगवान् महावीर ने हमें जीवन को वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक ढंग से जीने की कला सिखलाई, जिसका सर्वप्रथम प्रयोग उन्होंने स्वयं पर किया और अपने दिव्य अनुभवों को मानव कल्याण हेतु जन-जन तक जनभाषा 'प्राकृत' के माध्यम से पहुंचाया। वे जानते थे कि भाषा भावों की अभिव्यक्ति और ज्ञान-प्रचार का साधन है। अतः इसके लिए यदि जनसामान्य के बोलचाल की जनभाषा प्राकृत को माध्यम बनाया जाए तो अत्युत्तम होगा। इससे वे अपने आध्यात्मिक एवं तात्त्विक चिंतन से

प्रसूत ज्ञान रुपी अमृत को बिना भेद-भाव के समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचा सकते हैं ताकि वे आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर बन सकें, इसीलिए उन्होंने संस्कृत की अपेक्षा जनभाषा प्राकृत को ही अपने उपदेशों का माध्यम बनाया। आज प्राकृत भाषाओं में विपुल जैनागम तथा आगमेत्तर साहित्य उपलब्ध है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा का अभिन्न अंग है। यही कारण है कि भारत सरकार द्वारा प्राकृत भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त है।

महावीर दर्शन – सिद्धांतों से समाधान

भगवान् महावीर ने अनुसंधान किया की प्रारम्भिक तौर पर ऐसी कौन सी आदतें हैं जो मानव के व्यक्तित्व विकास में बाधक है। उन्होंने पाया कि सात ऐसी आदतें और पाँच ऐसे पाप हैं, जो मानव को सम्यक् पथ से भटका रहे हैं, वो हैं - जुआ, मांसाहार, मद्य(शराब आदि नशे का सेवन), वैश्यावृत्ति, शिकार, चोरी तथा परस्त्री सेवन - जिन्हें उन्होंने सप्त व्यसन के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि व्यसनी व्यक्ति के जीवन में धर्म नहीं उतर सकता, क्योंकि व्यसन धर्म का शत्रु है। व्यसन एक ऐसी बला है जो व्यक्ति की मानसिक पवित्रता को नष्ट कर उसकी सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक चेतना को विकृत कर देती है और हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील तथा परिग्रह जैसे पाँच पापों को परिणाम रूप जन्म देती है। इनसे बचाव हेतु भगवान् महावीर ने अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह – इन पाँच अणुव्रतों के माध्यम से मानव के संतुलित व्यक्तित्व विकास की नींव रखी।

भगवान् महावीर की यह स्पष्ट अवधारणा है कि हमारा व्यक्तित्व मात्र कपड़ो या शारीरिक सौंदर्य से ही निर्मित नहीं होता; उसमें हमारा चिंतन, वाणी और व्यवहार तथा आध्यात्मिक दृष्टि भी महत्वपूर्ण घटक है, जो हमारे सही और सम्पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करता है। वे कहते हैं कि यदि सफल जीवन जीना चाहते हो तो विचारों में 'अनेकांत', वाणी में 'स्याद्वाद', आचार में

'अहिंसा' और जीवन में 'अपरिग्रह' – इन चार सूत्रों को अपना जीवन आदर्श बना लो, जिनसे व्यक्ति के एक ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण हो सकता है, जो स्वयं उसके लिए तो कल्याणकारी होगा ही साथ ही वह परिवार, समाज, राष्ट्र तथा सम्पूर्ण विश्व के लिए भी कल्याणकारी होगा।

"अहिंसा परमो धर्मः"- भगवान् महावीर के इस मूलमंत्र के कारण ही भारत को विश्वगुरु की संज्ञा प्राप्त थी। विश्वशांति का संदेश देता 'जियो और जीने दो' का उनका संदेश एक ऐसे जीवन दर्शन को प्रस्तुत करता है, जिसमें अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांतवाद, स्याद्वाद आदि सिद्धान्त विभिन्न दृष्टिकोणों से स्वतः ही समाहित हो जाते है। उनके सभी सिद्धांत नैतिक मूल्यों को दर्शाते हैं। भगवान् महावीर की अहिंसा में 'भय' की कोई जगह नहीं, उनकी 'अहिंसा' हमें मन-वचन-काय से दया, प्रेम, करुणा सिखाती है, तो वहीं वस्तु में निहित ममत्व-मूर्च्छा के त्याग को उन्होंने 'अपरिग्रह' के सिद्धान्त के रूप में प्रतिपादित किया। अपरिग्रह के द्वारा हमें अनावश्यक परिग्रह न करके अतिआवश्यक सीमित साधनों में संतोषपूर्वक जीवन यापन करने का संदेश मिलता है। उनका 'अनेकान्त दर्शन' विभिन्न विचारधाराओं के प्रति आदर-भावना तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को जागृत करता है। अनेकान्त का अर्थ होता है घटना या परिस्थिति विशेष के अनेक संभावित पहलुओं को जान लेना। संसार में वैचारिक मतभेद भी कभी-कभी कलह के कारण बन जाते हैं। विसंवाद में भी संवाद बनाने कि कला का ही नाम है – अनेकान्त। वाद-विवाद से रहित सत्य के बहुआयामी दृष्टिकोण के चिंतन को विकसित करने वाला उनका 'स्याद्वाद' और 'अनेकान्तवाद' सिद्धान्त, हमारे भीतर सहनशीलता, परस्पर सौहार्द्र, सम भाव तथा लोकतन्त्र की भावना को प्रेरित करता है। समन्वय, सह-अस्तित्व, सहिष्णुता एवं सापेक्षता एक ही तत्त्व के नामांतर हैं, जिसका प्रतिनिधित्व अनेकांत दर्शन करता है। यदि भगवान् महावीर की इन शिक्षाओं को हम व्यावहारिक जीवन में उतारेंगे तो निश्चित ही एक आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण कर सकते हैं।

मुक्ति पथ प्रदर्शक -

भगवान् महावीर आत्मा की अनंत सामर्थ्य को उजागर करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार कोयले में हीरा तथा पत्थर की शिला में देव प्रतिमा स्वाभाविक रूप से ही विद्यमान है, उसी प्रकार इस आत्मा में भी परमात्मा बनने की सामर्थ्य सहज रूप से ही विद्यमान है, आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम अपनी शक्ति को पहचानें और तदनुरूप आचरण करें। तात्पर्य यह है कि ज्ञान-दर्शन-सुख-बल आदि अनन्त सामर्थ्य से परिपूर्ण यह आत्मा यदि अपनी शक्ति को पहचान कर राग-द्वेष मोहादि विकारी वृत्तियों से मुक्त हो जाये तो यह भी 'महावीर' सदृश बनने की पात्रता प्राप्त कर सकेगा।

यदि हम तीर्थंकर महावीर के सिद्धांतों का गहराई अध्ययन करेंगे तो हमें वो अमूल्य सूत्र प्राप्त होंगे जिनसे मानव के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। उन्होंने यह माना है कि व्यक्तित्व का आत्मिक विकास सर्वांगीर्ण होना चाहिए। इसके लिए उन्होंने, सम्यक् दर्शन (सही दृष्टि), सम्यक् ज्ञान (सही ज्ञान/निष्ठा) और सम्यक् चरित्र (सही आचरण) – इन रत्नत्रय के माध्यम से व्यक्तित्व विकास की ऐसी नींव रखी, जिसे मानव के मौलिक विकास में सहायक माना गया। सर्वप्रथम व्यक्तित्व का सबसे बड़ा पहलु है कि आपकी दृष्टि कैसी है? आपका दृष्टिकोण सही होना चाहिए। आपकी दृष्टि और विश्वास से आपकी आपके लक्ष्य के प्रति निष्ठा का पता चलता है। और उसी से निर्धारित होता है कि आपकी सफलता कितनी सुनिश्चित है। यही 'सम्यग्दर्शन' है। सही ज्ञान के अभाव में हम लक्ष्य से भटक सकते हैं। लक्ष्य के बारे में हमारे पास सही तथा प्रामाणिक सूचनाएं भी होनी चाहिए। इसीलिए 'सम्यक् ज्ञान' बहुत जरूरी है। सही विश्वास/निष्ठा/दृष्टि तथा सही ज्ञान भी हो गया, किन्तु महावीर कहते है कि अभी भी आप पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाए हैं। आप अपने लक्ष्य को तब तक नहीं प्राप्त कर सकते जब तक कि आप सही आचरण को प्राप्त नहीं कर लेते। पथ पर सही तरीके से चलना सही आचरण है। 'सम्यक् चारित्र' ही हमारे व्यक्तित्व का अंतिम सोपान है। अतः सम्यग्दर्शन,सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र के योग से ही हमारा मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

क्षमा वीरस्य भूषणम् -

तीर्थंकर महावीर के उपदेश मर्मस्पर्शी हैं, जिनमें जीवन की समस्याओं का समाधान निहित है। उनके 'अहिंसा' सिद्धान्त का अर्थ मात्र हिंसा करना नहीं बल्कि अन्तर्मन में प्रेम, करुणा, दया, क्षमा का उजागर होना है। वे कहते हैं जिस प्रकार 'अंधकार' को दूर करने के लिए हम 'प्रकाश' करते हैं तो अंधेरा स्वतः ही विलुप्त हो जाता है, उसी प्रकार अंधकार रूपी 'हिंसा' से पार पाने के लिए प्रकाश रूपी 'क्षमा' को अपनाया जाये तो 'अहिंसा' स्वतः ही प्रगट हो जाती है। 'क्षमा' के व्यापक स्वरूप को बतलाते हुए भगवान् महावीर कहते हैं कि -

"खामेमि सव्व जीवाणं, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्व भूएसु, वैरं मज्झं न केणई"

'अर्थात् मैं सभी जीवमात्र के प्रति क्षमाभाव रखता हूँ, सभी जीव मेरे द्वारा जाने-अनजाने अपराधों को क्षमा करें। सभी जीवों के प्रति मेरा मैत्रीभाव है। मेरा किसी प्राणिमात्र से कोई वैर नहीं है'। इस भावना में 'वसुधैवकुटुम्बकम्'' की उक्ति चरितार्थ होती है। यह मंत्र विश्वशांति के लिए प्रकाशस्तम्भ की तरह है। उन्होंने बताया कि आभूषण वही होता है जो व्यक्ति के वास्तविक सौंदर्य को प्रकट करे। बाहरी आभूषण शरीर को सजाते हैं, पर क्षमा मनुष्य के चरित्र, चेतना और आत्मिक गरिमा को उजागर करती है, इसीलिए क्षमा धर्म को वीरों का आभूषण कहा गया है। इस प्रकार भगवान् महावीर के सिद्धान्त मात्र सिद्धान्त नहीं अपितु यह प्रत्येक मानव के लिए एक आदर्श नागरिक संहिता है।

इस प्रकार भगवान् महावीर के वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने पहले थे और भविष्य में भी अनंतकाल रहेंगे। यही कारण है कि वे मात्र जैन बंधुओं के ही नहीं बल्कि जन-जन के महावीर हैं, जिनकी शिक्षाओं में जीवन की समस्याओं का समाधान निहित है। उनके किन्हीं भी सिद्धांतों में आग्रहवाद की गंध नहीं आती वरन् मैत्री, करुणा और सद्भाव की ख़ुशबू ही आती है। इनके अनुपालन से न केवल जीवों का मुक्ति का मार्ग ही प्रशस्त होता है वरन् सामान्य लोक जीवन भी सुन्दर हो जाता है।

भगवान महावीर स्वामी के अपरिग्रहवाद का लोकव्यापी महत्त्व

- डॉ. नरेन्द्र जैन भारती सनावद

श्रमण संस्कृति में अहिंसा के बाद अपरिग्रह के सम्यक् परिपालन पर जोर दिया गया है। भगवान महावीर स्वामी के पाँच सिद्धान्त महत्व पूर्ण माने गये हैं। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य। गृहस्थ इनका आंशिक पालन करता है, इसलिए वह पांच अणुव्रत के रूप में पालन करता है।सर्वस्व त्यागकर दिगम्बर मुनिजन धर्म का पालन करने वाले मुनिजन इनका पूरी तरह से पालन करते हुए मन, वचन और काय की शुद्धता के साथ जीवन व्यतीत करते हैं इसलिए वे महाव्रती कहलाते हैं। अत: इन पाँच सिद्धान्तों की महत्ता धर्म पालन के लिए कितनी आवश्यक है, इसका पता चलता है। इन पाँच व्रतों का पालन किये बिना हम जैन धर्म के सम्यक् रास्ते पर नहीं चल सकते। कहा गया है-

अहिंसा, सत्य अस्तेय, अपरिग्रह ब्रह्मचर्य,
पंच व्रत हैं फलनीय, चर्या यही है वर्य।
महावीर भगवान का यही मार्ग है श्रेष्ठ,
आओ पाले हम सभी बने जैन हित वर्य ॥

जगत् में यह कहा जाता है कि सभी अनर्थों की जड़ परिग्रह है। परिग्रह से राग बढ़ता है और राग से पाप बंध होता है। राग; दु:ख का कारण बनता है क्योंकि जन्म लेने के बाद व्यक्ति मात्र धन संग्रह और राग में अपना जीवन बर्बाद कर देता है। मन में धन कमाने का विचार, वचनों में परिग्रह संग्रह की बात और परिश्रम पूर्वक धन संग्रह में अनवरत संल्लिप्तता ऐसे कारण है जो व्यक्ति की भावना को परिग्रह संग्रह के लिए प्रेरित करती रहती है तथा अपरिग्रह धर्म के पालन से दूर रखती है। सामाजिक और पारिवारिक जीवन में असमानता की भावना को जगाये रखती है। इसलिए भगवान महावीर स्वामी ने परिग्रह को पाप का कारण बताया है। भगवान महावीर स्वामी कहते हैं कि अपरिग्रह को आग्रह के साथ जीवन में धारण कीजिए और धनादि के अभाव में भी समता भाव के साथ जीवन जीने की कला सीखिये।

इसी से आपको जीवन में भरपूर शांति मिलेगी। अल्प साधनों में जीवन व्यतीत करते रहना तथा तनावमुक्त रहना अपरिग्रह की महान विशेषता है। ग्रहस्थ के लिए अपरिग्रह का अर्थ है अल्प परिग्रह और मुनियों के लिए अपरिग्रह का अर्थ है सर्वस्व त्याग। ये दोनों स्थितियाँ आपकी इच्छा पर निर्भर है इसलिए भगवान महावीर स्वामी ने इच्छा निरोध को तप कहकर "इच्छा परिमाण" को अपरिग्रह कहा है। जमीन, मकान, सोना-चाँदी, रजत, धन धान्य आदि बाह्य तथा मिथ्यात्व, क्रोधादि अंतरंग परिग्रह से हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह ये पाँचों पाप होते हैं। अत: पाप की प्रवृत्ति से बचने के लिए भगवान महावीर स्वामी ने अपरिग्रह के पालन पर जोर दिया है। उनका मानना था कि जगत् के जीवों में जब असमानता का भाव रहता है तभी वह हिंसादि पाँच पाप कर बराबरी का हक पाना चाहता है इसके लिए वह धर्म के विपरीत कार्य कर सभी तरह के अनर्थ करता है। धनादि पर पदार्थों का सभी अपनी अपनी आवश्यकताओं के अनुसार उपयोग कर सके तथा संग्रहवृत्ति के ममत्वभाव का त्याग हो इसके लिए महावीर स्वामी ने सामाजिक जीवन में समानता पर जोर देते हुए बताया कि एक व्यक्ति असीम सुख-सुविधाओं का उपभोग करे और दूसरे व्यक्ति रोटी कपड़ा और मकान जैसी आवश्यक वस्तुओं से वंचित रहे, यह अनुचित है। यह अनुचित वृत्ति कालांतर में दु:ख का कारण बनती है। उन्होंने समता भाव को उचित बताकर उपभोक्तावाद से मुक्त होकर सर्वोदयवाद की भावना पर जोर दिया और बताया कि हम दूसरों के पास संपत्ति देखकर संतोष धारण करें और अनुचित रूप से उसे ग्रहण न करें। लोभ,लालच का त्याग कर अपरिग्रह को सुखी जीवन के लिए आवश्यक मानकर ही कार्य करें। धर्म की यही दशा सुख शांति लाने में सहायक बनेगी।

शाकाहार की गरिमा बचाने का समय

(शाकाहारी भोजन की शुद्ध पहचान : नामकरण का सांस्कृतिक प्रश्न)

डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

भोजन मनुष्य की मूल आवश्यकता अवश्य है, किंतु भारतीय जीवन-दृष्टि में वह केवल भूख शमन का साधन नहीं रहा है। यहाँ अन्न को प्रसाद, भोग और अन्नदेवता कहकर श्रद्धा और कृतज्ञता के साथ ग्रहण किया जाता है। भोजन शरीर को ऊर्जा देता है, तो मन और चेतना को संस्कार। इसीलिए भोजन की शुद्धता केवल उसके स्वाद या सामग्री तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उसके भाव, प्रस्तुति और नामकरण तक विस्तृत होती है।

यदि भोजन सात्त्विक, अहिंसक और शुद्ध है, तो उसके नाम में भी वही सात्त्विकता और गरिमा प्रतिबिंबित होनी चाहिए। दुर्भाग्यवश, आज शाकाहारी भोजन की यह पहचान उसके नामकरण में हो रही उपेक्षा के कारण क्रमशः धूमिल होती जा रही है।

समकालीन खान-पान की संस्कृति में ऐसे नाम अब सामान्य हो गए हैं— वेज बिरयानी, हरा-भरा कबाब, पनीर मुसल्लम, दही कबाब, वेज कोरमा, मैंगो जोश। बाज़ार की दृष्टि से ये नाम भले ही आकर्षक और लोकप्रिय हों, किंतु इनके मूल भाषाई और सांस्कृतिक अर्थों पर विचार किया जाए, तो प्रश्न उठता है—क्या यह नामकरण शाकाहारी भोजन की आत्मा के साथ न्याय करता है?

बिरयानी, कबाब और कोरमा जैसे शब्द ऐतिहासिक रूप से मांसाहारी व्यंजनों से जुड़े रहे हैं।

बिरयानी को परंपरागत रूप से मांस और अन्य सामग्री के संयोजन के रूप में जाना गया है।

कबाब एक फारसी शब्द है, जिसका तात्पर्य पके हुए मांस से है।

कोरमा भी भुने हुए मांस से संबंधित शब्द माना जाता है।

ऐसे में प्रश्न यह है कि यदि इन शब्दों के आगे "वेज" या "पनीर" जोड़ दिया जाए, तो क्या उनके मूल अर्थ और सांस्कृतिक सन्दर्भ स्वतः परिवर्तित हो जाते हैं, या यह केवल उपभोक्ता की सुविधा और बाज़ार की माँग के अनुरूप किया गया भाषाई प्रयोग मात्र है?

यह प्रश्न किसी एक व्यंजन या शब्द तक सीमित नहीं है। यह उस व्यापक प्रवृत्ति की ओर संकेत करता है, जिसमें शाकाहारी परंपरा अपनी पहचान को बनाए रखने के स्थान पर उधार की शब्दावली में स्वयं को प्रस्तुत कर रही है। क्या यह हमारी सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता का संकेत है, या उसके क्षरण का?

वस्तुतः भारत की शाकाहारी परंपरा न केवल प्राचीन है, बल्कि अत्यंत समृद्ध और सृजनशील भी रही है। पूड़ी-सब्ज़ी, खिचड़ी, कढ़ी, शाही सब्ज़ी, मलाई कोफ्ता, पुलाव, केसरिया भात, दाल-भात, बाटी-चूरमा जैसे असंख्य व्यंजन और उनके नाम हमारी सांस्कृतिक स्मृति का हिस्सा हैं। ये नाम स्वाद के साथ-साथ परंपरा और पहचान भी संजोए हुए हैं। फिर यह विडंबना क्यों कि हम शाकाहारी भोजन को ऐसे नामों से अलंकृत करें, जिनका मूल अर्थ ही उसकी आत्मा से मेल नहीं खाता?

यह लेख किसी के विरुद्ध आरोप नहीं करता। यह तो केवल विचार और विवेक के पुनरावलोकन का आग्रह है।

केटरिंग उद्योग से अपेक्षा है कि वह शाकाहारी व्यंजनों के लिए मौलिक, सटीक और संस्कारयुक्त नामों का चयन करे।

होटल और रेस्टोरेंट के उपभोक्ताओं से यह अपेक्षा भी है कि वे सजग बनें और असंगत नामकरण पर शालीनतापूर्वक अपनी असहमति व्यक्त करें। और समाज के प्रत्येक वर्ग से यह निवेदन है कि भोजन का चयन करते समय केवल स्वाद और प्रस्तुति ही नहीं, बल्कि उसके सांस्कृतिक सन्दर्भ पर भी दृष्टि रखें। क्योंकि संस्कृति का क्षरण प्रायः बड़े आघातों से नहीं, बल्कि छोटी-छोटी उपेक्षाओं से आरंभ होता है। शाकाहार केवल भोजन नहीं—एक विचार है, एक जीवन-दर्शन है। उसकी गरिमा बचाना, वस्तुतः अपनी सांस्कृतिक चेतना की रक्षा करना है।

भूलेश्वर मंदिर में चिकित्सा शिविर संपन्न

बरखा प्रवीण फाउंडेशन की तरफ से श्री चंद्रप्रभ दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट एवं हमेशा फाउंडेशन के सहयोग से रविवार, 15 फरवरी को सुबह 10.30 से 12.30 तक मेडिकल जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया, शिविर का आयोजन श्री चंद्रप्रभ दिगंबर जैन मंदिर, 161, भूलेश्वर रोड में किया गया। इसमें मुफ्त रक्त जांच सीबीसी एवं क्रिएटिनिन के साथ प्रसिद्ध डॉक्टर द्वारा रोगों के लक्षणों व उपचार पर महत्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया गया। डायबिटीज की रोकथाम, डायलिसिस का प्रभाव, अंग प्रत्यारोपण व दवा के रूप में आहार पर चर्चा एवं सुझाव दिए गए। चिकित्सा शिविर में मुख्य रूप से डॉ. प्रशांत राजपूत, डॉ विनीता साल्वे का महत्वपूर्ण योगदान रहा साथ ही उपस्थित भूलेश्वर मंदिर के ट्रस्टी श्री डीसी जैन, श्री दिनेश पाण्डे, श्री मनोज जैन, श्री सुरेश हिंसावत (लायन) का विशेष सहयोग रहा।

भारत' नाम के ऐतिहासिक सत्य पर गूंजा आभासी मंच - 'भारतनामा: भारत का नामकरण' पर राष्ट्रीय स्तर का विमर्श संपन्न

- राजेंद्र जैन महावीर "सनावद"

'भारत' नाम की उत्पत्ति,ऋषभदेव आदिनाथ के पुत्र भरत के नाम पर हुई थी, उसके वैदिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक आधारों पर केंद्रित एक महत्वपूर्ण अकादमिक विमर्श 17 फरवरी की सायंकाल सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम इंडियन रिसर्च स्कॉलर्स एसोसिएशन (IRSA) के तत्वावधान में गूगल मीट के माध्यम से आयोजित किया गया, जिसमें देशभर के शिक्षाविद्, शोधार्थी एवं विद्वान शामिल हुए।

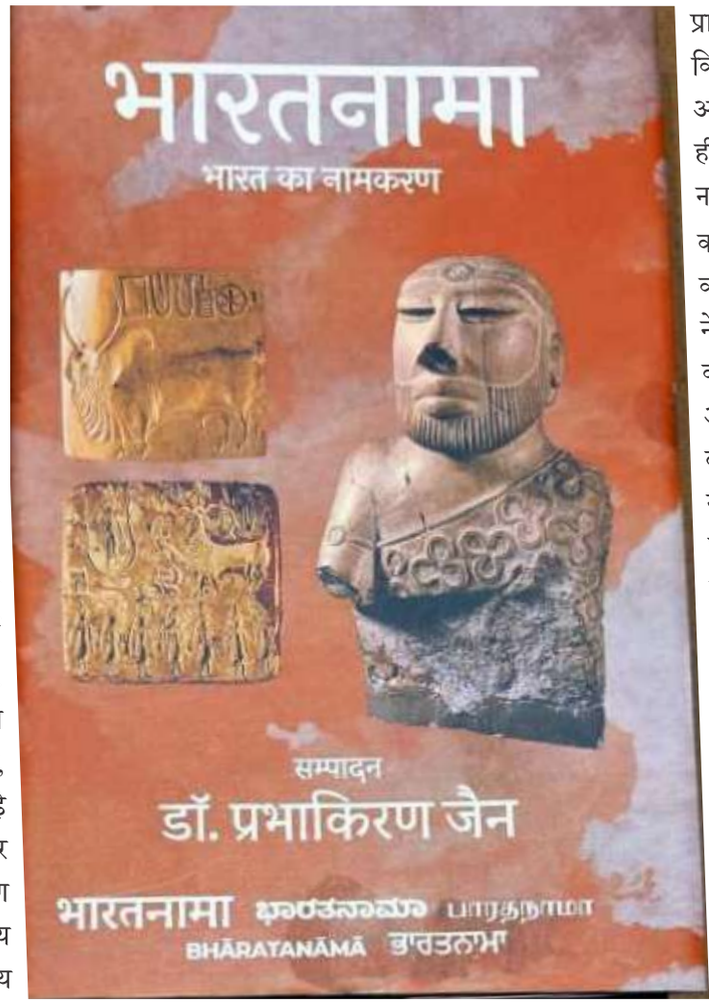

आभासी कार्यक्रम में सम्मिलित जैन गजट के सह संपादक राजेंद्र जैन महावीर सनावद ने बताया कि विमर्श का केंद्र रही चर्चित लेखिका डॉ. प्रभाकिरण जैन की शोधपरक कृति भारतनामा: भारत का नामकरण, जिसमें 'भारत' नाम की उत्पत्ति से जुड़े प्राचीन ग्रंथों, पुरातात्विक प्रमाणों और ऐतिहासिक मतों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब के माननीय कुलपति प्रो. जगबीर सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि "राष्ट्र के नामकरण पर गंभीर शास्त्रीय विमर्श समय की आवश्यकता है, और यह पुस्तक उस दिशा में एक सार्थक एवं प्रामाणिक प्रयास है।"

विशिष्ट अतिथि के रूप में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. श्री प्रकाशमणि त्रिपाठी ने पुस्तक को भारतीय इतिहास लेखन की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी बताते हुए इसे शोधार्थियों के लिए मार्गदर्शक ग्रंथ बताते हुए बृहस्पति आगम, विष्णु पुराण, आदि पुराण, महाभारत, रामायण आदि ग्रंथ का उल्लेख करते हुए कहा कि डॉक्टर प्रभात किरण जैन द्वारा लिखित पुस्तक भारत नामा भारतीय ज्ञान परंपरा के ज्ञान प्रवाह में महत्वपूर्ण योगदान है। डा ॅ त्रिपाठी ने इस तथ्य की प्रामाणिकता का उल्लेख करते हुए कहा कि हमारे देश का नामकरण "भारत" आदि ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम पर ही हुआ है । अन्य भरत के नाम पर नामकरण के प्रमाण नहीं हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता दयाल सिंह कॉलेज की प्राचार्या प्रो. भावना पाण्डेय ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि इस प्रकार के विमर्श न केवल अकादमिक चेतना को प्रखर करते हैं, बल्कि राष्ट्र की सांस्कृतिक अस्मिता पर सार्थक संवाद को भी आगे बढ़ाते हैं।भारत नामा में उत्प्रेरणा, उत्प्रेरक,उद्देश्य तीनों कारक मौजूद हैं।

लेखिका डॉ. प्रभाकिरण जैन ने पुस्तक परिचय प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट किया कि 'भारत' नाम केवल एक भौगोलिक पहचान नहीं, बल्कि एक दीर्घ सांस्कृतिक परंपरा और वैचारिक धारा का प्रतीक है। उन्होंने बताया कि पुस्तक में वैदिक साहित्य, पुराणों, जैन एवं बौद्ध स्रोतों सहित विभिन्न ऐतिहासिक साक्ष्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

कार्यक्रम का संयोजन डॉ. विकास कुमार ने किया, जबकि सह-संयोजक डॉ. हेमंत कुमार (जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय) एवं सचिव डॉ. लोकपा तामांग (राजीव गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय) थे।संचालन शुभांगी ने किया। शोधार्थी श्रद्धा सहित अनेक जनों ने प्रश्न किए।

अंत में आयोजित प्रश्नोत्तर सत्र में प्रतिभागियों ने जिज्ञासापूर्वक अपने प्रश्न रखे, जिनका विद्वानों ने तथ्यपूर्ण उत्तर दिया। डा विकास के आभार प्रदर्शन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। प्रतिभागियों में विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, आचार्यों तथा शोधार्थियों ने शिरकत की। यह विमर्श 'भारत' नाम की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने की दिशा में एक महत्वपूर्ण और प्रेरक पहल है।

जैन साहित्य और संस्कृति की समृद्ध परम्परा : इसका इतिहास संजोने की आवश्यकता

प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी', वाराणसी

भारतीय इतिहास का अध्ययन जब शैशव अवस्था में था, तब कुछ तथाकथित इतिहासकारों की यह भ्रान्त धारणा थी कि जैनधर्म कोई बहुत प्राचीन धर्म नहीं है अथवा यह हिन्दू या बौद्ध धर्म की एक शाखा मात्र है। किन्तु जैसे-जैसे प्राचीन साहित्य, कला, भाषावैज्ञानिक अध्ययन तथा पुरातत्व आदि से सम्बन्धित नये-नये विपुल तथ्य सामने आते गये तथा इनके तुलनात्मक अध्ययन-अनुसन्धान का कार्य आगे बढ़ता जा रहा है वैसे वैसे जैनधर्म-दर्शन, साहित्य एवं संस्कृति की प्राचीनता तथा उसकी गौरवपूर्ण परम्परा को सभी स्वीकार करते जा रहे हैं।

अब तो कुछ इतिहासकार विविध प्रमाणों के आधार पर यह भी स्वीकृत करने लगे हैं कि आर्यों के कथित आगमन के पूर्व भारत में जो संस्कृति थी वह श्रमण या आर्हत् संस्कृति होनी चाहिए। इतना ही नहीं वैदिक तथा बौद्ध साहित्य में उपलब्ध अनेकों प्रमाणों के आधार पर जैनधर्म के चौबीस तीर्थंकरों की लम्बी परम्परा में से प्रथम तीर्थंकर ऋषभ, बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ, तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ तथा चौबीसवें एवं अन्तिम तीर्थंकर वर्धमान महावीर को विद्वान् ऐतिहासिक महापुरुष सिद्ध कर चुके हैं। इसी तरह जैसे-जैसे ऐतिहासिक तथ्यों के अध्ययन अनुसन्धान का कार्य आगे बढ़ेगा, वैसे ही अन्य सभी तीर्थंकर तथा उनकी विशाल परम्परा के गौरवपूर्ण इतिहास को सभी स्वीकृत करेंगे। साहित्य समाज और संस्कृति का दर्पण होता है, इसीलिए समाज एवं संस्कृति की आत्मा साहित्य के भीतर से अपने रूप लावण्य को अभिव्यक्त करती है। इसी कारण साहित्य सामाजिक भावनाओं क्रान्तिमय विचारों एवं जीवन के विभिन्न उत्थान-पतन की विशुद्ध अभिव्यंजना है। इसीलिए साहित्य को सनातन उपलब्धि का साधन माना गया है। कतिपय मनीषियों ने आत्म तथा अनात्म भावनाओं की भव्य अभिव्यक्ति को साहित्य कहा है। यह साहित्य किसी देश समाज या व्यक्ति का सामयिक समर्थक नहीं, बल्कि सार्वदेशिक और सार्वकालिक नियमों से प्रभावित होता है।

वस्तुतः महान् जैनाचार्यों ने स्व-पर कल्याण हेतु संयममार्ग पर चलते हुए अपने अनुभूत उच्च तत्त्वज्ञान-विज्ञान, धर्म-दर्शन, साहित्य, संगीत, इतिहास, पुराण, काव्य, गणित, आयुर्वेद, ज्योतिष, कला, कोष एवं व्याकरण तथा बहुमूल्य व्यावहारिक एवं नैतिक जीवन की पद्धतियों से सम्बन्धित एक से बढ़कर एक सहस्रों ग्रन्थों का सृजन किया। अपने देश के ही नहीं, अपितु विश्व के साहित्य मनीषी जिन्होंने जैन साहित्य का गहराई से अवलोकन किया है, वे जैनाचार्यों के समुज्वल ज्ञान एवं अद्भुत प्रतिभा के समक्ष नतमस्तक हुए बिना नहीं रहते। उनका मानना है कि सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति, सभ्यता, समाज, धर्म, राजनीति, और अर्थनीति आदि विभिन्न विधाओं का सम्पूर्ण ज्ञान जैन साहित्य के अध्ययन के बिना अधूरा है.

बीसवीं शताब्दी के अंतिम पांच-छः दशकों एवं इक्कीसवीं के आरम्भिक दो दशकों तक के काल में जैन साहित्य पर अनुसंधान, अध्ययन-अध्यापन एवं सम्पादन तथा लेखन का कार्य जिस तेजी से हुआ, और जिसके परिणामस्वरूप अप्रकाशित दुर्लभ विशाल साहित्य तथा उसमें निहित ढेर सारी सामग्री की दुर्लभ सूचनायें, विपुल ज्ञान-विज्ञान के नये क्षितिज सामने आये हैं। बहुत सारा प्रकाशित-अप्रकाशित साहित्य भी उपयोगी नये रूप में प्रकाश में आया है। उसकी महत्ता भी निर्विवाद है, किन्तु यह भी सत्य है कि जितना व्यापक उसका अध्ययन-अध्यापन, वह नहीं हुआ। प्रचार-प्रसार तथा साहित्य जगत में उसके यथोचित मूल्यांकन होना चाहिए था। इतना ही नहीं अभी भी बहुत अप्रकाशित साहित्य शेष है। इस सबके बावजूद भारतीय साहित्य के विकास एवं समृद्धि में जैनाचार्यों द्वारा सृजित विपुल एवं विविध विधाओं में उपलब्ध विपुल साहित्य के अद्वितीय योगदान के यथोचित मूल्यांकन और अध्ययन -अनुसंधान के प्रति कम अरुचि भी चिन्ता का विषय है। अन्यथा क्या बात है कि विविध भाषाओं के सम्पूर्ण भारतीय साहित्य का जो इतिहास उपलब्ध है अथवा लिखा जाता है, उसमें जैन साहित्य की चर्चा नगण्य जैसी ही है, अथवा होती ही नहीं है। आज भी आपको ऐसे इतिहास के ग्रन्थ और शोध-प्रबन्ध आदि देखने को मिलेंगे जो महाकाव्य, चम्पूकाव्य, पुराण, आगम, ज्योतिष, गणित, कला एवं संस्कृति आदि विषयों से सम्बन्धित है और अपने आपमें उस विषयक "सम्पूर्ण अध्ययन" की वकालत करते हैं, किन्तु उनमें तद् विषयक जैन-ग्रन्थों तथा उनके रचयिता जैनाचार्यों और उनके योगदान की चर्चा तक नहीं है थोड़ी बहुत होगी भी तो वह दूसरे माध्यमों से उधार ली हुई, अल्प एवं भ्रामक सूचनाओं पर आधारित है। ऐसे कुछ लेखक सीमित लेखन या अनुसंधान में ही अपने कार्य की सम्पूर्णता का अनुभव कर लेते हैं प्रमुख आधारभूत जैन। तथा भारतीय वाङ्मय के ग्रन्थों की उपेक्षा कर देते हैं।

मुझे चम्पूकाव्य एवं महाकाव्य तथा पुराण आदि से संबंधित ऐसे स्वीकृत अनेक शोध-प्रबन्ध देखने का अवसर मिला है, जिन्हें शोधकर्ताओं ने अपने सीमित ज्ञान के आधार पर सबकुछ लिखा है, किन्तु उसे यह भी ज्ञात नहीं है कि जैन साहित्य में भी आ० सोमदेव सूरि कृत' यशस्तिलक चम्पू, महाकवि हरिचंद्र कृत 'जीवन्धर चम्पू' तथा आ० जिनसेन कृत पार्श्वोभ्युदय जैसे अनेक महाकाव्य तथा आगम शास्त्र, पुराण, ज्योतिष, गणित,आयुर्वेद आदि अनेक विषयों के एक से बढ़कर एक ग्रन्थ जैन साहित्य के भी उपलब्ध हैं?

जब भी संस्कृत गद्य साहित्य के अध्ययन की बात होती है तो मात्र एक बाणभट्ट द्वारा लिखित "कादम्बरी" तक ही चर्चा सीमित रह जाती है, किन्तु जैन साहित्य में संस्कृत गद्य के प्रतिनिधि ग्रन्थ महाकवि धनपाल (१०वीं शती) द्वारा रचित "तिलकमञ्जरी" तथा "वाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्" की उक्ति को मिथ्या सिद्ध करने वाले महाकवि वादीभसिंह (ओडयदेव, नवीं

शती) द्वारा रचित "गद्यचिन्तामणि'" का नाम लेने वाला भी कोई नहीं है। इसी तरह महाकाव्यों में मात्र कुछ प्रसिद्ध महाकाव्यों को ही सर्वत्र पाठ्यक्रम में स्थान प्राप्त है, जबकि महाकवि हरिचन्द्र(१३वीं शती) द्वारा २१ सर्गों में रचित "धर्मशर्माभ्युदय",आ० जिनसेन के पार्वाभ्युदय तथा बीसवीं शती के महाकवि आ० ज्ञानसागरजी द्वारा लिखित 'जयोदय महाकाव्य' जैसे और भी अनेक उत्तमोत्तम महाकाव्यों की इसलिए उपेक्षा कर देते हैं, चूंकि वे जैन परम्परा के हैं।

संस्कृत कोशों में मात्र "अमरकोश" का ही अध्ययन अध्यापन विशेष प्रचलन वहीं है, हेमचन्द्राचार्य (१३वीं शती) की "अभिधान चिन्तामणि नाममाला", महाकवि धनंजय की 'धनञ्जय नाममाला' (१०वीं शती) एवं श्रीधरसेनाचार्य कृत (१३-१४वीं शती) विश्वलोचनकोश जैसे जैन कोश ग्रन्थों की उपेक्षा कर दी जाती है। इसी तरह संस्कृत, प्राकृत तथा हिन्दी भाषा के सैकड़ों ऐसे जैन ग्रन्थ हैं, जिन्हें विभिन्न पाठ्यक्रमों में रखे जाने से साहित्य जगत् में उन ग्रन्थों का सही मूल्यांकन होकर उनसे नैतिक मूल्यों का लाभ तथा अपने देश की गौरववृद्धि के पूरे अवसर हैं, किन्तु न मालूम क्यों ऐसी मानसिकता बन गयी है कि जो ग्रन्थ अन्य परम्पराओं के पहले से ही प्रसिद्धि और प्रचलन में हैं, वे भले ही साम्प्रदायिक हों, फिर भी वे ही सार्वजनिक एवं सर्वोच्च हैं तथा उन्हें ही इतिहास तथा पाठ्यक्रमों में अच्छा स्थान दिया जाना चाहिए, बाकी जैन- परम्परा श्रेष्ठ होकर भी उन्हें उपेक्षित कर साम्प्रदायिकता का लेबल लगा दिया जाता है, भले ही वे कितने अच्छे हों। यद्यपि इसमें हम लोगों की भी कमी है। इसे दूर करने के लिए जैन साहित्य के व्यापक प्रचार-प्रसार और युगीन एवं आधुनिक ढंग से अच्छे सम्पादनऔर प्रकाशन के साथ-साथ सुव्यवस्थित रूप में इनके व्यापक प्रचार - प्रसार की अत्यन्त आवश्यकता है।

आज भी शताधिक पुस्तकालयों, संग्रहालयों, मन्दिरों, विभिन्न शास्त्रभण्डारों तथा निजी संग्रहालयों में हजारों हस्तलिखित ग्रन्थ नष्टप्रायः होने की स्थिति में पहुंच रहे हैं और अपने उद्धार की प्रतीक्षा में पड़े हुए हैं। हमारी उपेक्षा के चलते कितना ही साहित्य नष्ट हो गया और कितना निरन्तर नष्ट हो रहा है। यद्यपि इस अमूल्य निधि के संरक्षण की ओर केन्द्र सरकार का ध्यान भी पूरे देश के हस्तलिखित ग्रन्थों के सूचीकरण एवं शास्त्रभण्डारों के सर्वेक्षण की ओर गया है.इस कार्य को पूर्ण करने में केंद्र सरकार की ओर से कई योजनाएं चल भी रहीं हैं। आज अनेक जैनाचार्यों की महत्वपूर्ण कृतियां ऐसी हैं, जिनके उल्लेख तो मिलते हैं, किन्तु अनुपलब्ध हैं अथवा कुछ अधूरी ही प्राप्त हैं। इनकी खोज विभिन्न शास्त्रभण्डारों में योजनाबद्ध रूप में किया जाना अपेक्षित है।

जैन साहित्य के इतिहास का एक सर्वांगीण विवेचन महत्वपूर्ण कार्य है, किन्तु कठिन भी कम नहीं है। फिर भी हमारे दूरदर्शी कुछ प्रमुख आचार्यों ने अपने ग्रन्थों तथा शिलालेखों आदि में वह मूल्यवान ऐतिहासिक सामग्री संरक्षित कर रखी है, जिसका इतिहास- लेखन में व्यापक उपयोग आवश्यक है। यद्यपि आत्मप्रशंसा से बचने के लिए हमारे कुछ प्रमुख आचार्यों ने अपने एवं अपनी परम्परा के विषय में बहुत कम लिखा या कुछ भी नहीं लिखा है। अतः हमारे विद्वानों को इतिहास लिखने के लिए विशाल वाङ्मय तथा शिलालेखों, प्रशस्तियों आदि से यत्र-तत्र बिखरी हुई सामग्री तथा सन्दर्भों को जोड़कर किस प्रकार साहित्य और संस्कृति के इतिहास की रचना करनी पड़ी, ये कठिनाईयां ऐसे लेखक विद्वान् ही जान-समझ सकते हैं। इतना सब होने पर ही वे इस इतिहास को अभी अपूर्ण ही मानते हैं। साथ ही इसमें लेखन की अपार सम्भावनायें मानते हुए निरन्तर पूरा करने हेतु प्रयत्नशील रहना भी आवश्यक है ।महामेघवाहन कलिंग नरेश खारवेल का, इस सन्दर्भ में हमें आभारी होना चाहिए कलिंग महाराजा जिन्होंने ईसा की प्रथम शती पूर्व में ही उदयगिरि खण्डगिरि के हाथी गुम्फा शिलालेख में जैन संस्कृति के गौरव को लिखवाकर अमर कर दिया था। इसी शिलालेख में अपने देश के भारतवर्ष नामकरण का सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है. इसी प्रकार मथुरा के कंकाली टीला से प्राप्त आयागपट्टों, मूर्ति-शिल्पों आदि में उल्लिखित लेखों ने तथा श्रवणवेलगोल एवं यत्र-तत्र के सहस्रों शिलालेखों आदि के साथ ही अनेक पट्टावलियों, गुर्वावलियों आदि ने भी हमें अपने इतिहास को संजोने में बहुत मदद की । अन्यथा न मालूम जैन संस्कृति का इतिहास कितना पिछड़ जाता। हमारे विशाल जैन साहित्य ने भी हमें इतिहास के सूत्र इकट्ठे करने में बहुत सहयोग किया है।

हम दसवीं शती के आचार्य इन्द्रनन्दि और उनके श्रुतावतार ग्रन्थ के योगदान को कभी भूल ही नहीं सकते, जिसमें हमारी पूरी आचार्य परम्परा और ग्रन्थ लेखन का इतिहास भी उल्लिखित है। इसके साथ ही वैदिक तथा बौद्ध साहित्य में जो जैन परम्परा के उल्लेख मिलते हैं, उन्हें सुरक्षित रखने हेतु हम उनके भी बहुत आभारी हैं। इनसे हमारी जैन संस्कृति की प्राचीनता सिद्ध करने में बहुत मदद मिली।

प्राकृत जैनागमों में प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति से संबंधित बहुमूल्य सामग्री बिखरी हुई है।सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन में इसका उपयोग किया जाना आवश्यक है। क्योंकि प्राचीन भारतीय इतिहास की अनेक अनिर्णीत तिथियों एवं घटनाओं के निर्धारण एवं सत्यापन में भी यह साहित्य अधिक सहायक सिद्ध हो सकता है। वस्तुतः साहित्येतिहास का सम्बन्ध राजनैतिक, आर्थिक, समाजशास्त्रीय, धार्मिक और मनोवैज्ञानिक इतिहास लेखन से कहीं न कहीं गहरा होता है। आज इन सभी ज्ञान-विज्ञानों के प्रामाणिक इतिहास भी सुलभ हैं। इन सबके आलोक में भारतीय संस्कृति और साहित्य के इतिहास के स्वरूप को पुर्नविश्लेषित और व्यवस्थित करके प्रस्तुत करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है, ताकि उसका यथोचित उपयोग और मूल्यांकन होता रहे। इस दृष्टि से डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन की "भारतीय इतिहास एक दृष्टि" में एक आदर्श एवं प्रशंसनीय पुस्तक है, जो भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से प्रकाशित है। इसमें भारतीय इतिहास के लेखन में जैन सन्दर्भों का यथोचित उपयोग किया गया है।

इतिहास के पुनर्लेखन हेतु इण्टरनेट आदि के उपयोगों सहित अद्यतन अध्ययन की, प्रामाणिक सामग्री एवं आवश्यक तथ्यों की आवश्यकता होती है। इसके लिए भारत के कोने-कोने में स्थित जैन

शास्त्रभण्डारों, पुस्तकालयों द्वारा अलग-अलग सामग्री तालिका सहित प्रकाशित की जाए तो बहुत अच्छी सामग्री एकत्रित हो जायेगी। साथ ही सभी इतिहास लेखकों को वहां की मूल सामग्री का उपयोग करने की छूट के साथ ही घर बैठे इण्टरनेट आदि पर ये सुविधायें स्वतः उपलब्ध कराना चाहिए। अब तो आधुनिक विज्ञान ने इण्टरनेट,ए. आई. जैसे अनेक संसाधनों के जरिये इस कार्य को और भी सुगम बना दिया है। अतः किसी अखिल भारतीय स्तर की संस्था के माध्यम से सभी तथ्यपूर्ण सामग्री, आदि को एकत्र कर वैज्ञानिक ढंग से उसका सम्पादन कराके ग्रन्थ रूप में इनका प्रकाशन किया जाना अपेक्षित है। इस हेतु कोई प्रामाणिक मासिक पत्रिका भी बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकती है, ताकि विद्वानों को निरन्तर घर बैठे नयी-नयी सूचनाएं प्राप्त होती रहें।

ये सब ऐसे कार्य हैं, जिसके बिना समग्र भारतीय संस्कृति और साहित्येतिहास के लेखन का हर प्रयत्न अधूरा और अपूर्ण बना रहता है। यदि योजनाबद्ध ढंग से प्रोजेक्ट बनाकर मान्य संस्थानों के माध्यम से इन्हें प्रस्तुत किया जाए तो सरकार भी इन्हें पूर्ण करने में पूरी मदद करती है।आज के युग की यह अत्यन्त जरूरी आवश्यकता है कि प्रत्येक आचार्य की समस्त कृतियों का अनुवाद सहित संग्रह अर्थात् उनकी ग्रन्थावली प्रकाशित हों। इन ग्रन्थों के सुसम्पादित पाठ तैयार कराके संग्रह रूप में प्रकाशित कराने की एक सुचिन्तित योजनाबद्ध योजना- कार्यक्रम, सामाजिक एवं प्रकाशन संस्थाओं, विश्वविद्यालयों एवं अन्यान्य सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों के माध्यम से अथवा स्वतंत्ररूप से भी इन्हें चलाया जा सकता है । विश्वविद्यालयों में इन क्षेत्रों के शोध के लिए प्रोत्साहन भी ज्यादा अपेक्षित है, ताकि ज्यादा से ज्यादा विद्वान् इस ओर आकृष्ट हों और पी-एच०डी० आदि शोधोपाधियों के माध्यम से अथवा स्वतंत्ररूप से मौलिक तथा स्तरीय कार्य हो सकें। ऐसा होने पर भावी साहित्येतिहास की आधारभूत अनिवार्य सामग्री सुलभ हो सकेगी और नये साहित्येतिहास की परिपूर्णता के प्रति आश्वस्त हुआ जा सकेगा।

साहित्येतिहास की आधारभूत सामग्री, चूंकि कहीं एकत्र सुलभ होने के बजाय पूरे भारत में बिखरी हुई है, इसलिए उसका अवलोकन, अध्ययन, विश्लेषण किसी एक व्यक्ति द्वारा असंभव है। इसके लिए कुछ विद्वानों की टीमें (टोलियां) बनाकर कार्य कराना भी आवश्यक है। जो विभिन्न क्षेत्रों की बिखरी सामग्री का अलग-अलग अनुशीलन और विश्लेषण करें और अन्त में सभी विद्वान् मिलकर विश्लेषित सामग्री का समायोजन करें, तब जाकर वास्तविक इतिहास का स्थापत्य निर्मित होगा।

देश में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली अनेक उच्च या सामान्य प्रतियोगी परीक्षाओं में तथा विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रवेश हेतु आयोजित प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी हेतु देश के विभिन्न प्रकाशकों द्वारा संस्कृति, दर्शन - इतिहास आदि विषयक प्रकाशित पुस्तकें, गाइडें या नोट्स आदि कभी पढ़कर देखिये, जो हमारी पीढ़ी को पढ़ाया जा रहा है। इनमें जैनधर्म के विषय में ऐसी-ऐसी भ्रामक बातें एवं सूचनाएं मिलेंगी कि हम सभी आश्चर्य हुए बिना न रहेंगे। ऐसे प्रकाशकों, लेखकों को संबंधित विषयों के मूलग्रन्थ या प्रामाणिक लेखकों के ग्रन्थ एवं तथ्यपूर्ण सामग्री देकर उन्हें भूल सुधार हेतु प्रेरित करना सभी जिम्मेदारी और जैन विद्वानों की प्रमुख कर्तव्य है ।

वस्तुतः हमें अपना समग्र साहित्य सब तक पहुंचाना बहुत अपेक्षित है। क्योंकि सभी क्षेत्रों और विषयों के विशेषज्ञ लेखकों के पास यदि हमारा साहित्य नहीं पहुंचा, तो सही और पूर्ण जानकारी के अभाव में वह जो भी लिखेंगे, वह तथ्य-रहित, एकांगी, भ्रामक और अपूर्ण होना स्वाभाविक है। इस तरह अब नित नये शोध-खोज और विविध आयामों में अनेक दृष्टिकोणों से जैन साहित्य के इतिहास के पुनर्लेखन की आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसके लिए साहित्येतिहास लेखन के सिद्धान्त, पद्धति और इतिहास, दर्शन आदि का गहराई और आधुनिक तकनीकी के साथ विस्तार के साथ उसका अध्ययन और उसका लेखन किया जाना भी आज के युग की मांग है। तभी जैन साहित्य और संस्कृति के इतिहास के भावी लेखन को नया प्रकाश मिल सकेगा। आईये हम सभी मिलजुलकर ऐसे जैन साहित्येतिहास के पुनर्निर्माण में अपना-अपना योगदान सुनिश्चित करें, ताकि हम अपनी भावी पीढ़ी को एक जैन साहित्य और संस्कृति का नया युगीन इतिहास देकर गौरव का अनुभव कर सकें।

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की प्रबन्धकारिणी कमेटी में श्री सुधांशु कासलीवाल, अध्यक्ष एवं श्री उमरावमल संघी मंत्री पद पर निर्वाचित

जयपुर 8 मार्च 2026 उत्तर भारत के सबसे बड़े जैन तीर्थ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की प्रबन्धकारिणी कमेटी के पदाधिकारियों के त्रैवार्षिक चुनाव रविवार को नारायणसिंह सर्किल स्थित भट्टारकजी की नसिया में निर्वाचन अधिकारी श्री सतीश अजमेरा की देखरेख में सम्पन्न हुए। चुनाव में श्री सुधांशु कासलीवाल को अध्यक्ष पद पर तथा श्री उमरावमल संघी को मंत्री पद पर निर्वाचन घोषित किया गया। उपाध्यक्ष पद के लिए श्री चन्द्रप्रकाश जैन एवं श्री पूनमचन्द्र शाह, संयुक्त मंत्री पद के लिए श्री रूपिन के. काला एवं श्री अनिल पाटनी (दीवान) तथा कोषाध्यक्ष पद पर श्री हेमन्त सौगानी निर्वाचित घोषित किये गये।

सतीश अजमेरा, निर्वाचन अधिकारी

नवनिर्वाचितों को भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार हार्दिक शुभकमनाएं प्रेषित करता है।

धार स्थित भोजशाला जैन धार्मिक विरासत और संस्कृति को बचाने के लिए श्रमण और श्रावकों से आव्हान

-निर्मलकुमार पाटोदी, इंदौर

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी. टैंक, मुंबई-400 004 के विधान और नियमावली के उद्देश्य (१) में सम्पूर्ण तीर्थक्षेत्र, अतिशय क्षेत्र और यथासंभव श्री मंदिर जी और श्री १००८ प्रतिमाजी आदि धर्मायतनों की सम्हाल रखना है। (२) जिन-जिन तीर्थ क्षेत्रों के मंदिर जीर्ण हो गए हों उनका जीर्णोद्धार कराकर प्रभावना की वृद्धि करना। पृष्ठ-१२ परः- तीर्क्षो से संबंधित मुकदमों की देखभाल करना व तत् संबंधित ख़र्चों के लिए नीति निर्धारित करना।

इंदौर के नज़दीक राजा भोज की धार-धारानगरी में स्थित भोजशाला में किंवदंती अनुसार कभी आचार्य मानतुंग महाराज ने भक्तामर स्तोत्र की रचना की होगी। -पिछले चौबीस वर्षो से दिगंबर जैनधर्म की इस प्राचीन विरासत के संबंध में अजैन समाज के अनुयायियों के बीच भोजशाला पर अधिकार को लेकर विवाद बढ़ कर न्यायालय में हैं। मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय की इंदौर खंडपीठ में इस विवाद की सुनवाई सोमवार 16 मार्च 2026 को होने की तारीख है।

समूचे दिगंबर जैनधर्म के श्रमण और समाज के समक्ष धार स्थित भोजशाला के अस्तित्व के संबंध संकटकाल उपस्थित है। देश के अनेक भागों में हमारे धर्म की प्राचीन धार्मिक विरासतों अन्य धर्मावलंबियों द्वारा सुविचारित योजना के आधार पर येन-केन-प्रकरेण कब्जा करने का अभियान जारी है। हम आसन्न संकट को स्वयं को अत्यल्प अल्पसंख्यक मानकर उदासीन हैं। सोचा जा रहा है कि बहुसंख्यकों के सामने हम असहाय और विवश हैं। कमजोर मानसिकता चिंतन से हम ग्रसित हैं।समाज के लिए विचारणीय है हम भारत गणराज्य के संविधान सम्मत नागरिक हैं। हमारे संवैधानिक अधिकार हैं। संख्या में अत्यल्प संख्यक होने से हम अल्पसंख्यक समुदाय के अधिकार भी हमारे साथ हैं। अगर हमारा आत्मबल मज़बूत हो जाए तो हम शांति और अहिंसा और न्याय के आधार पर अपने धर्म स्थलों, तीर्थों, प्राचीन धार्मिक विरासतों को बचा सकते हैं। हम देश के संविधान के आधार पर न्यायपालिका से न्याय प्राप्त कर सकते है। अगर हम समर्पित और एकजुट हो जाएं तो अपनी धार्मिक तीर्थों और विरासतों को पूरी तरह से बचा सकते हैं।देश के विभिन्न भागों में स्थित हमारी धार्मिक और सांस्कृतिक विरासतों को बचाने का अवसर आज और अभी है। -देखते ही देखते गुजरात के जूनागढ़ गिरनार पर्वत पर स्थित सिद्धक्षेत्र की टोंको पर अन्य

मतावलंबियों ने बलात् कब्जा किया हुआ है। मानसिक कमजोरी के कारण हम स्वयं के दबाव में हैं। असहाय हैं। -इंदौर के नज़दीक राजा भोज की प्राचीन धारानगरी-धार की जैन भोजशाला में जहाँ से कभी हजारों शिक्षार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे। उस पर अधिकार के लिए न्यायालयों के माध्यम से अन्य समुदायअधिकार प्राप्त करना चाहते हैं। -हमारी जैन समाज के पक्ष में प्राचीन प्रमाण हैं फिर भी हम न्यायालय के माध्यम से न्यायालय की शरण में जाने से दूर हैं। - राजस्थान के अजमेर में अढ़ाई दिन का झोपड़ा है। यह स्थान भी जैन शिक्षा का केन्द्र रहा है। किंतु यहां भी हम उदासीन हैं। -शिरपुर महाराष्ट्र स्थित अंतरिक्ष पार्श्वनाथ जो हमारे समाज का धार्मिक स्थल है। यह भी अन्य समाज धनबल और बाहुबल का सहारा लेकर विवाद करता रहता है। - सम्मेदशिखर पहाड़ पर तो अन्य समाज के लोग लाखों की संख्या में जाने लगे हैं। उन्होंने हमारे तीर्थराज पहाड़ के पर्यटन स्थल बना रखा है। अधिक संख्याबल के कारण हमारी सिद्धक्षेत्र की टोंकों पर अविनय हो रही है। इस अधार्मिक गतिविधि पर नियंत्रण करने के लिये नियम बनाकर लागू करना आवश्यक हैं। अब तो हमारे आधे यात्री पवित्र पहाड़ की वंदना के लिए मोटर साइकिल से जाने लगे हैं।

-जैन भोजशाला धार पर न्यायिक अधिकार के लिए एक अकेला जूटा हुआ है - वह है दिल्ली का सलेकचंद जैन, रिटायर्ड और सेवानिवृत्त धर्म सेवक। पिछले बीस वर्षों से यह व्यक्ति प्रयत्नशील है। अपनी पेंशन की राशि जैन धर्म से संबंधित मामलों पर खर्च कर रहा है। - जैन संस्कृति और विरासत को बचाने और उन पर समाज का अधिकार दिलाने के लिए जुनून के साथ लगा हुआ है। वह - समाज की संस्थाओं का हर संभव साथ चाहता है। किंतु कहीं से भी अब तक सहयोग का हाथ आगे नहीं बढ़ा ह। विचारणीय है कब तक अकेला धर्म सेवक दम भरेगा। एक न एक दिन थकना संभव है। - धर्म सेवक सलेकचंद जैनधर्म की धरोहर, विरासत, अहिंसा और शाकाहार जैसे विषयों में सरकार के विभागों से सूचना के अधिकार के अंतर्गत जानकारी प्राप्त करता है। पत्र-व्यवहार करता है। न्यायालयों में रिट याचिकाएँ फाइल करता रहता है।- सलेकचंद जी ने सन् 2024 में मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय की इंदौर खंडपीठ में भोजशाला से संबंधित याचिका प्रस्तुत कर दी थी। तब न्यायालय ने याचिका को इंदौर हाईकोर्ट के फार्मेट में तैयार कर फाइल करने का निर्देश दिया था। - रविवार 08 मार्च 2026 को आप इंदौर की जवरीबाग नसिया में अपने सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता दिनेशप्रसाद राजभर को साथ में लेकर ठहरे हुए हैं। - मंगलवार 10 मार्च 2026 को सलेकचंद की ओर से उनके सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता ने इंदौर खंडपीठ में रिट याचिका फाइल कर दी है। -ब्रिटिश म्युजियम लंदन के रेकार्ड के अनुसार भोजशाला धार की धरोहर, मार्बल की मूर्ति जैन श्रुतदेवी/ सरस्वती की है जिसे हिंदू पक्ष ने न्यायालय में हिंदू सरस्वती की बताया है। मूर्ति के आसपास पांच जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां उत्कीर्ण मूर्तियां हैं। सरस्वती मूर्ति के हाथ में पुस्तक है। -मार्बल की वाग्देवी माँ सरस्वती की इस वाग्देवी मूर्ति को 1902 में अंग्रेज़ अधिकारी मेजर किनकैड अपने साथ इंग्लैंड ले गया जो आज भी ब्रिटिश म्युजियम, लंदन है। यह मूर्ति अंग्रेजों को भोजशाला के मलबे में मिली। -सन् 1961 में इतिहासकार डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर लंदन गए और मूर्ति का निरीक्षण करके आए। उसके बाद उन्होंने यह प्रमाणित किया कि यह वही मूर्ति है जिसे अंग्रेज भोजशाला, धार, भारत से ले गए थे। - नईदुनिया, इंदौर के अंक में भोजशाला से संबंधित पुरातत्त्व सर्वेक्षण रिपोर्ट के आधार पर 16 जुलाई 2024 के पूरे पृष्ठ में प्रकाशित जानकारी है कि सर्वेक्षण में दो जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां भी मिली गई है। -भोजशाला में हुए पुरातत्त्व सर्वेक्षण में जानकारी मिली है कि उसमें स्थित पाषाण शिलालेख में "पारिजात मंजरी, मदन द्वारा रचित नाटक उत्कीर्ण मिला है। जो प्राकृत और संस्कृत में है। प्राकृत भाषा में मूल रूप से जैनधर्म के आगम ग्रंथ रचित हुए है। प्राकृत में जैनधर्म का मौलिक प्राचीन साहित्य रचा गया है। भोजशाला से संबंधित अन्य प्रमाण याचिका में प्रस्तुत किए गए हैं

संस्कृति के आद्य प्रवर्तक - तीर्थंकर ऋषभदेव

डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

भारत वर्ष की इस शस्यश्यामला भूमि ने समय—समय पर अनेकों महान विभूतियों को जन्म दिया। अभी तक हमने जिन—जिन महापुरुषों के जीवन चरित्र को पढ़ा है, वे सब अपनी १—२ विशेषताओं से ही प्रसिद्धि को प्राप्त हो गये। किन्तु यदि हम अभी तक के समस्त महापुरुषों के रचनात्मक कार्यों की एक तालिका (सूची) बनाएँ और किसी एक ही व्यक्तित्व में वे सब (खोजें) ढूढें तो उस व्यक्तित्व का नाम है 'तीर्थंकर ऋषभदेव'। आज तक हमने पत्तों—फूलों—तनों—डालियों और शाखाओं के बारे में सोचा है, उन्हीं का गुणगान किया है। जड़ के महान उपकार को कौन याद करता है? अभी तक के तमाम आविष्कारों एवं उन्नति के क्षेत्रों के बारे में स्वस्थ मानसिकता से विचार करेंगे तो हम पायेंगे कि जिन्होंने हमें कृषि करना सिखाया, अ, आ, इ, क, ख, ग............ की वर्णमाला दी १, २, ३, ४ .... की संख्याएँ दी, लोक व्यवहार सिखाया, युद्ध, अर्थ एवं राजनीति की शिक्षा दी। गाँवों, नगरों एवं महानगरों की बसावट बतलाई। संक्षिप्ततः जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं होगा, जहाँ भगवान ऋषभदेव का अवदान हमें न मिला हो। लेकिन कौन जानता है, उस नींव के पत्थर को? इधर की कुछ शताब्दियों में इतिहासकारों एवं दार्शनिकों की कुछ पहुँच—बनी है ऋषभदेव तक। मोहनजोदड़ों और हड़प्पा की खुदाई से प्राप्त अवशेषों, वेदों की ऋचाएँ, मनुस्मृति के श्लोकों, पुराणों की गाथाओं तथा भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन आदि विद्वानों की सशक्त एवं प्रामाणिक लेखनी से इस तरह के कुछ तथ्य सामने आये हैं जो इस महान व्यक्तित्व का परिचय जानने में हमारी सहायता करेंगे।

भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित करने वाले भगवान ऋषभदेव के पिता श्री नाभिरायजी एवं मातुश्री मरुदेवी थी। अयोध्या में माता यशस्वती एवं सुनन्दा से भरत और बाहुबली जैसे यशस्वी पुत्र तथा ब्राह्मी—सुन्दरी नामक दो बेटियाँ एवं ९९ अन्य पुत्र जन्में थे। भगवान ऋषभदेव कब हुये? इतिहास की भाषा में इसे जानना सम्भव नहीं है। वर्तमान गणित की सर्वोत्कृष्ट अंक संख्या भी इसे कहने में असमर्थ है। जैन मान्यता के अनुसार वे असंख्यात वर्ष पूर्व हुए! ऐसा भगवान महावीर स्वामी के दिव्य ज्ञान (केवल ज्ञान) में आया था। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि भगवान ऋषभदेव के बड़े बेटे भरत, जोकि चक्रवर्ती सम्राट थे उन्हीं के नाम से इस देश का नाम भारत पड़ा। ऐसा उल्लेख जैनग्रंथ आदिपुराण के अलावा वैदिक परम्परा के नारद पुराण तथा अन्य पुराण ग्रंथों में आया है। इसी प्रकार ऋषभदेव ने अपनी बेटी ब्राह्मी को लिपि विद्या सिखाई उस बेटी के नाम से ही आद्य लिपि का नाम 'ब्राह्मी—लिपि' जगत में प्रसिद्ध हुआ।

विभिन्न धर्मों में चौबीस की संख्या ने अपना अचछा खासा स्थान बनाया है। वैदिक परम्परा में चौबीस अवतारों, बौद्धों एवं अहूर संप्रदाय में चौबीस—चौबीस महापुरुषों का इतिहास मिलता है। उसी तरह जैन परम्परा में चौबीस तीर्थंकरों का पूर्ण विवेचन आया है। सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन ने अपनी कृति 'Indian Philosophy' के प्रथम खण्ड से भगवान ऋषभदेव, अजितनाथ, अरिष्टनेमि, पार्श्वनाथ एवं भगवान महावीर स्वामी का उल्लेख करते हुए लिखा है कि इनका वर्णन यजुर्वेद एवं भागवत् पुराण में आया है। उन्होंने लिखा है कि भागवत् पुराण इस विचार का समर्थन करता है कि 'ऋषभदेव जैन धर्म के प्रवर्तक थे।' सम्राट अशोक के धर्म चक्र के चौबीस आरे, चौबीस तीर्थंकरों के प्रतीक है। जैन धर्म में चौबीस तीर्थंकर हैं, वर्तमान में उन्हीं का नाम ज्यादा प्रचलित है। सीधी—सादी बात है आप अपने पापाजी के बारे में जितना जानते हैं, परदादा जी या दादाजी के बारे में या तो अनभिज्ञ या बहुत कम जानेते हैं ऐसा क्यों? कारण यह है कि पापाजी का आप पर सीधा उपकार है। ठीक ऐसी ही स्थिति जैन धर्म मार्ग में भगवान महावीर स्वामी के सम्बन्ध में जानना चाहिए।

जैन धर्म न तो वैदिक धर्म की शाखा है और न ही बौद्ध धर्म के साथ जन्मा वरन् जब हम इसके सिद्धान्तों एवं जीवन आचार को देखते हैं तब स्वयं ही मन और मस्तिष्क मानने को तैयार हो जाता है कि यह तो एक स्वतन्त्र, मौलिक दर्शन एवं वैज्ञानिक धर्म है। इसने अनेकान्तवाद, स्याद्वाद और व्यक्ति स्वातंत्र्य जैसे सिद्धान्त दिये। राष्ट्र को अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह जैसे सिद्धान्तों की देन इसी धर्म की है।

वर्तमान में हम देखते हैं कि हम सब में से अधिकतर लोगों के घर के नाम एवं स्कूल के नाम अलग—अलग रखे जाते हैं। जबकि व्यक्ति एक होता है उसी तरह भगवान ऋषभदेव को वृषभदेव, आदिनाथ, आदियोगी, आदिब्रह्मा, कैलाशपति, बाबा आदम आदि अनेक नामों से जाना जाता है। इस महान् आत्मा की इतनी प्रसिद्धि हुई वैदिक परम्परा में कहा जाता है कि 'अड़सठ तीर्थों की यात्रा करने से जितना फल होता है उतना फल भगवान आदिनाथ के स्मरण करने से होता है।'

भगवान ऋषभदेव ने युग के प्रारम्भ में 'ऋषि बनो या कृषि करो' का सूत्र दिया। लोगों की तमाम जीवनोपयोगी क्रियाओं को बतलाया। अपने पुत्रों को राजनीति, युद्ध, मल्ल विद्या, नाट्य, गीत, संगीत आदि ७२ कलाएँ सिखाई। दण्ड—व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, पुरुषार्थ व्यवस्था दी। असि, मसि, कृषि, शिल्प, विद्या और वाणिज्य जैसे षट्कर्म बताये। इस तरह भगवान ऋषभदेव के परिपूर्ण, समग्र एवं बहु आयामी व्यक्तित्व के महान उपकार को स्मरण कर उनके प्रति हृदय कृतज्ञता से भर जाता है।

भगवान ऋषभदेव की जन्म जयन्ती चैत्र कृष्णा नवमी के पुनीत अवसर पर ऐसे महापुरुष के श्री चरणों में शत्—शत् प्रणाम!

इन्हीं भगवान ऋषभदेव के अवदान को जन—जन तक पहुँचाने के लिए जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, नारीसमुदाय की आदर्श, परम पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने महाराष्ट्र प्रान्त के नासिक जिले में स्थित प्रसिद्ध जैन तीर्थ मांगी—तुंगी मेंैजंजनम व ापिडें के नाम से १०८ फीट विशालकाय भगवान ऋषभदेव की विशाल मूर्ति का निर्माण कराया है। यह विश्व की विशालतम् अखण्ड पाषाण से निर्मित मूर्ति है इसके दर्शन से असीम शान्ति की अनुभूति होती है।

गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में इसका नाम दर्ज है।

यहाँ यह जानना रोचक है कि भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या शाश्वत जैन तीर्थ है। यह शाश्वत जन्मभूमि है। पूर्व के चौबीस तीर्थंकरों (भूतकाल की चौबीसी) ने भी इसी अयोध्या में जन्म लिया है।

वर्तमानकाल के २४ तीर्थंकरों में से ५ तीर्थंकरों (श्री आदिनाथ जी, श्री अजितनाथ जी, श्री अभिनन्दनाथ जी, श्री सुमतिनाथ जी एवं श्री अनन्तनाथ जी) ने भी इसी अयोध्या में जन्म लिया है किन्तु आज यह सम्पूर्ण विश्व में राम जन्मभूमि के रूप में विख्यात है। हमारी उदासीनता के कारण यह स्थिति बनी है। परम पूज्य आचार्य रत्न श्री देशभूषण जी महाराज ने अयोध्या को ऋषभ जन्मभूमि के रूप में प्रचारित करने के भाव से यहाँ रायगंज में भगवान ऋषभदेव की विशाल खड़गासन प्रतिमा की स्थापना कराई थी। यह मन्दिर बड़ी मूर्ति के नाम से ही प्रसिद्ध है।

वर्तमान में परम पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने इस तीर्थ के विकास की प्रेरणा दी है। वे स्वयं ९३–९४ में वहाँ गई थी। बाद में भी गई एवं वर्तमान में ससंघ वहाँ प्रवास कर क्षेत्र के विकास कार्यों को आशीर्वाद दे रही हैं। आगामी राष्ट्रीय जैन विद्वत् सम्मेलन आपके सान्निध्य में ही हो रहा है।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी का 125वाँ स्थापना वर्ष महोत्सव संपूर्ण भारत में धूमधाम से मनाया जाएगा

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी की एक महत्वपूर्ण बैठक डालीगंज जैन मंदिर में उत्तर प्रदेश उत्तराखंड अंचल अध्यक्ष श्री जवाहर लाल जैन की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में उन्होंने बताया कि तीर्थ क्षेत्र कमेटी का 125वाँ स्थापना वर्ष समारोह बड़े ही धूमधाम से मनाया जाएगा। स्थापना दिवस समारोह की रूपरेखा तय करने के उद्देश्य से यह बैठक आयोजित की गई थी।बैठक में डालीगंज जैन मंदिर के महामंत्री श्री सुबोध जैन, अयोध्या तीर्थ क्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री अमरचंद जैन, वरिष्ठ प्रबंधक श्री वीर कुमार जैन, श्री वीर कुमार जैन (साड़ी वाले), श्री रितेश जैन रूबी जैन पुस्तक वाटिका, श्री शुभचंद जैन, क्षमा जैन (इंदिरा नगर) सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे।इसके अतिरिक्त इंदिरा नगर जैन समाज से श्री पी.के. जैन (अध्यक्ष) एवं श्रीमती ज्योति जैन, चौक समाज से श्री विशाल जैन एवं श्रीमती स्मृति जैन, तथा गोमती नगर से श्री सुकांत जैन की गरिमामयी उपस्थिति रही।डालीगंज जैन मंदिर की गणिनी ज्ञानमती महिला भक्त मंडल की ओर से डॉ. राधा जैन एवं श्रीमती सुलभा जैन सहित अन्य महिला सदस्याओं ने भी बैठक में सहभागिता की। कार्यक्रम का मंगलाचरण श्रीमती शीतू जैन द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन तीर्थक्षेत्र कमेटी उत्तर प्रदेश उत्तराखंड महिला प्रकोष्ठ मंत्री श्रीमती सुनयना जैन ने सभी उपस्थित सदस्यों का स्वागत करते हुए आभार व्यक्त किया

भारत के दिगंबर जैन तीर्थों पर प्रामाणिक ग्रंथों के प्रकाशन की कार्ययोजना पर मंथन

शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष के अंतर्गत बीटीआईआरटी सागर में हुई महत्त्वपूर्ण बैठक

सागर।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष के उपलक्ष्य में "भारत के दिगंबर जैन तीर्थ" विषय पर बहुखंडीय ग्रंथों के प्रकाशन की योजना को मूर्त रूप देने हेतु एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन बी.टी.आई.आर.टी., सागर में किया गया। बैठक की अध्यक्षता डॉ. अनुपम जैन ने की।

बैठक में शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष के संयोजक जवाहर जैन सिकंदराबाद ने वर्ष भर आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष जम्बूप्रसाद जैन गाजियाबाद की अध्यक्षता में लिए गए निर्णय अनुसार दिगंबर जैन तीर्थों के विस्तृत, प्रामाणिक परिचय को विभिन्न खंडों में प्रकाशित किया जाएगा।

अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. अनुपम जैन इंदौर ने कहा कि भारतवर्ष में स्थित निर्वाण क्षेत्र, कल्याणक क्षेत्र एवं प्रमुख अतिशय क्षेत्रों का व्यापक सर्वेक्षण कर प्रमाणिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से प्रामाणिक ग्रंथों का प्रकाशन किया जाना प्रस्तावित है। इसी उद्देश्य से रूपरेखा तय करने हेतु यह बैठक आयोजित की गई।

कमेटी के राष्ट्रीय मंत्री हंसमुख गांधी इंदौर ने बताया कि लगभग 50 वर्ष पूर्व श्री बलभद्र जैन द्वारा तीर्थों के परिचय के पाँच खंड प्रकाशित किए गए थे, किंतु समय के साथ अनेक परिवर्तन हो चुके हैं। ऐसे में वर्तमान संदर्भों के अनुरूप नवीन प्रकाशन अत्यंत आवश्यक हो गया है।

बैठक में लेखक मंडल का गठन करते हुए अंचलवार दायित्व सौंपे गए। राजस्थान प्रांत – डॉ. नरेंद्र कुमार जैन-टीकमगढ़,/ उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड – डॉ. सुनील जैन संचय-ललितपुर,/ मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ – राजेन्द्र महावीर, सनावद / झारखंड, बिहार, उड़ीसा, बंगाल, असम – प्राचार्य सुरेन्द्र कुमार जैन, भगवा,/ आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु – विजय जैन बाबा जी।

गुजरात महाराष्ट्र सहित अन्य प्रांतों के दायित्व अगली बैठक में तय किए जाएंगे। तीर्थों के संपूर्ण एवं प्रामाणिक विवरण हेतु लेखकगण संबंधित तीर्थों पर प्रत्यक्ष भ्रमण करेंगे, जिसकी विधिवत सूचना तीर्थ क्षेत्र कमेटी द्वारा संबंधित तीर्थ कमेटियों को दी जाएगी।

इस संपूर्ण कार्ययोजना का मुख्य कार्यालय बी.टी.आई.आर.टी., सागर को बनाया गया है। इसके लिए संतोष जैन घड़ी, कार्याध्यक्ष, भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी (मध्यांचल) को समन्वयक मनोनीत किया गया।

इस अवसर पर बी.टी.आई.आर.टी., सागर की ओर से चेयरमैन संतोष जैन घड़ी, डायरेक्टर डॉ. सतेन्द्र जैन, श्रेयांस जैन एवं मनोज बंगेला सहित अन्य सहयोगियों ने सभी अतिथियों एवं पदाधिकारियों का स्मृति-चिह्न, माला, श्रीफल एवं दुपट्टा भेंट कर स्वागत किया। साथ ही तीर्थ क्षेत्र कमेटी की ओर से श्रेष्ठी संतोष जैन घड़ी को सफलतम पंचकल्याणक महोत्सव के पुण्यार्जन हेतु विशेष सम्मान प्रदान किया गया।

बैठक का संचालन डॉ. सुनील जैन संचय ने किया, जबकि कमेटी की ओर से श्रीमती मीनू जैन (प्रचारमंत्री) गाजियाबाद ने आभार व्यक्त किया।

बैठक उपरांत बाबूलाल ताराबाई इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी (BTIRT) का अवलोकन चेयरमैन संतोष जैन घड़ी एवं डायरेक्टर डॉ. सतेन्द्र जैन द्वारा कराया गया।

ग्रंथ प्रकाशन हेतु उच्चाधिकार प्राप्त समिति के प्रधान संपादक डॉ अनुपम जैन, अध्यक्ष जवाहरलाल जैन, समन्वयक संतोष जैन घड़ी, प्रतिनिधि हंसमुख गांधी मनोनीत किए गए तथा लेखक मंडल में डॉ. नरेंद्र कुमार जैन टीकमगढ़, प्राचार्य सुरेन्द्र कुमार जैन 'भगवा', डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर, श्री राजेन्द्र 'महावीर', सनावद एवं श्री विजय जैन बाबा जी को मनोनीत किया गया।

— डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

संयुक्त महामंत्री- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी उत्तर प्रदेश-

पिच्छी, कमंडल, शास्त्र से संयम का पालन होता है : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने पदमपुरा में दी 5वीं दीक्षा

आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने 123 दीक्षा में पदमपुरा में 5 वीं दीक्षा दी। इस अवसर पर आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने प्रवचन में बताया कि राजस्थान के बूंदी जिले के गंभीरा में आचार्य श्री धर्मसागर जी का जन्म हुआ। पदमपुरा में पंचकल्याणक के निमित्त संघ का आगमन हुआ। यह एक भगवान का अतिशय है कि यहां पदमपुरा के इतिहास में पहली बार क्षुल्लिका, आर्यिका, मुनि और आज क्षुल्लक दीक्षा देने का हमें अवसर मिला। चतुर्विध संघ में मुनि, आर्यिका क्षुल्लक और क्षुल्लिका होते हैं। क्षुल्लक एवं क्षुल्लिका 11 प्रतिमाधारी उत्कृष्ट श्रावक श्राविका होते हैं। दीक्षा मोक्ष का मार्ग है। इन्हें वैराग्य उत्पन्न हुआ और इन्होंने दीक्षा के भाव व्यक्त किया अणुव्रत और पिच्छी, कमंडल संयम के पालन के लिए दिए गए। शास्त्र से ज्ञान वर्धित होता है।, दया धर्म होता है। कोमल पिच्छी जो मयूर पंख से बनी होती है, उसे दया धर्म का पालन होकर सूक्ष्म जीवों की रक्षा होती है। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने अतिशय क्षेत्र पदमपुरा में कहा कि दीक्षा की कोई उम्र नहीं होती है, जहां एक 30 वर्षीय बाल ब्रह्मचारी सत्यम भैया ने दीक्षा ली है। वहीं 78 वर्षीय ब्रह्मचारी लादूलाल जी ने दीक्षा ली है। दोनों वर्षों से व्रत प्रतिमाधारी होकर साधना कर रहे हैं। आज दोनों दीक्षार्थी का ड्रेस एड्रेस बदल गया है। क्षुल्लक वेश को धारण कर आगे बढ़ने का भाव रखे हैं।

हमारी भावना है कि वह पदमप्रभ भगवान के सामने भावों को उत्कृष्ट बनावे समता के परिणाम रखें। जिस प्रकार लौकिक जीवन में परिवार में नए सदस्य के आने से आपको खुशी होती है उसी प्रकार नई दीक्षा से संघ में भी वृद्धि हुई है। इसके पूर्व प्रथम दोनों दीक्षार्थियों के केश लोचन आचार्य श्री वर्धमान सागर जी, मुनिश्री हितेंद्र सागर जी, मुनिश्री चिंतन सागर जी, मुनि श्री प्रभव सागर जी, मुनिश्री दर्शित सागर जी एवं अन्य साधुओं ने किया। मंगल स्नान कर दोनों दीक्षार्थियों ने श्री जी का पंचामृत अभिषेक किया।

दोनों नव दीक्षित क्षुल्लकां को पिच्छी, कमंडल, शास्त्र किए भेंट अतिशय क्षेत्र पदमप्रभ जिनालय परिसर में परिवार को सौभाग्य शाली महिलाओं ने चोक पूर्ण किया। दोनों दीक्षार्थियों के पंचमुष्टि केशलोच आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने किए। धोती दुपट्टे के स्थान पर लंगोट ओर दुपट्टा धारण करने के बाद आचार्य श्री ने मस्तक ओर हाथों में अणुव्रत दीक्षा के संस्कार किए। झांतला नीमच मप्र के 7 व्रत प्रतिमाधारी 78 वर्षीय ब्रह्मचारी लादूलाल का दीक्षा उपरांत क्षुल्लक श्री सुभग सागर जी बने। उमापुर बीड महाराष्ट्र के 30 वर्षीय बाल ब्रह्मचारी सत्यम भैय्या दीक्षा बाद क्षुल्लक श्री सुगुप्त सागर जी बने। दोनों नव दीक्षित क्षुल्लका को पिच्छी, कमंडल, शास्त्र, कपड़े और गृहस्थ अवस्था के परिजनों एवं श्री पदमपुरा कमेटी के हेमंत सोगानी, राजकुमार कोठारी, सुरेश सबलावत, महावीर पाटनी एवं अन्य ने दिए। यह सौभाग्य शाली भक्तों ने आचार्य श्री के चरण प्रक्षालन कर जिनवाणी भेंट की। संघस्थ शिष्या आर्यिका श्री महायश मति के अनुसार 76 वर्षीय आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने 58 वर्ष के संयमी जीवन में 36 वर्ष के आचार्य अवधि में अभी तक 123 दीक्षाएं दी हैं। जिसमें 24 दीक्षाएं सिद्ध क्षेत्रों में तथा आज सहित 41 दीक्षा अतिशय क्षेत्र में दी हैं। श्रवण बेलगोला और पदमपुरा में क्षुल्लक, क्षुल्लिका, आर्यिका ओर मुनि दीक्षा दी हैं।

राष्ट्रीय जैन विद्वत् सम्मेलन

अयोध्या, 2-4 अप्रैल 2026

तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ एवं उ.प्र. जैन विद्या शोध संस्थान, लखनऊ के संयुक्त तत्त्वावधान में परम पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ के पावन सान्निध्य में दि. जैन तीर्थक्षेत्र, अयोध्या में त्रिदिवसीय राष्ट्रीय जैन विद्वत् सम्मेलन २–४ अप्रैल २०२६ के मध्य आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन में शताधिक जैन विद्वान सम्मिलित हो रहे हैं। सम्मेलन का केन्द्रीय विषय है।

'षट्खंडागम एवं उसकी सिद्धान्तचिंतामणि टीका'

महासंघ के अध्यक्ष डॉ. अनुपम जैन ने बताया कि सम्मेलन के मध्य २०२६ के विद्वत् महासंघ पुरस्कारों तथा महावीराचार्य पुरस्कार – २०२६ का समर्पण समारोह भी आयोजित होगा।

शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष की पूर्व बेला में अयोध्या तीर्थ पर आयोजित इस सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में अतिविशिष्ट अतिथि रूप में हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी जैन उपस्थित रहेंगे। शतकोत्तर–रजत स्थापना वर्ष आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री जवाहरलाल जैन की भी गौरवपूर्ण उपस्थिति रहेगी।

– डॉ. अनुपम जैन

ऐतिहासिक 'श्री विद्या समय शिखरजी यात्रा २०२६' भव्य रूप से संपन्न
१०३९ श्रद्धालुओं ने किया सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेद शिखरजी का पावन वंदना

युगपुरुष, संत शिरोमणि परम पूज्य आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के द्वितीय समाधि दिवस के पावन उपलक्ष्य में 'विद्या समय संस्कार सेवा फाउंडेशन, मुंबई' के तत्वावधान में आयोजित 'श्री विद्या समय शिखरजी यात्रा २०२६' २२ फरवरी २०२६ को सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

यह ऐतिहासिक यात्रा १५ फरवरी २०२६ को लोकमान्य तिलक टर्मिनस से विशेष रेलगाड़ी (संख्या ००१३९) द्वारा प्रारंभ हुई थी। यात्रा का उद्देश्य उन सहस्रों श्रावकों को शाश्वत सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेद शिखरजी की वंदना कराना था, जो अब तक इस निर्वाण-भूमि के दर्शन से वंचित थे।

१०२१ श्रद्धालुओं ने पूर्ण की निर्विघ्न वंदना- १०३९ तीर्थयात्रियों के विशाल संघ में से १०२१ श्रद्धालुओं ने पर्वतराज की पूर्ण वंदना की। इनमें ९०० से अधिक श्रद्धालु ऐसे थे, जिन्हें जीवन में पहली बार शिखरजी की पावन माटी का स्पर्श करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यात्रा में १ दृष्टिहीन किशोर, २ मूकबधिर वरिष्ठ नागरिक, १ मूकबधिर बालिका एवं लगभग १० गंभीर रोगों से ग्रसित श्रद्धालुओं ने अदम्य आस्था और संकल्प के साथ पूर्ण वंदना कर प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया। विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह रहा कि १०० से अधिक व्रती श्रावक इस यात्रा में सम्मिलित हुए, जिनमें ९० प्रतिशत ६० से ९० वर्ष आयु वर्ग के वरिष्ठ नागरिक थे। सभी व्रती श्रावकों की संपूर्ण यात्रा के दौरान शुद्ध दिनचर्या का पूर्ण निर्वाह सुनिश्चित किया गया।

पूज्य संतों का मंगल आशीर्वाद

यह संपूर्ण यात्रा परम पूज्य
आचार्य श्री १०८ समयसागर जी महाराज,
आचार्य श्री १०८ वसुनंदी जी महाराज,
आचार्य श्री १०८ सुनील सागर जी महाराज,
मुनिश्री १०८ सुधासागर जी महाराज,
मुनिश्री १०८ प्रमाणसागर जी महाराज,
मुनिश्री १०८ नियमसागर जी महाराज,
मुनिश्री १०८ संभवसागर जी महाराज,
गणिनी प्रमुख आर्यिका श्री १०५ ज्ञानमती माताजी एवं
आर्यिका श्री १०५ पूर्णमती माताजी के मंगल आशीर्वाद से निर्विघ्न संपन्न हुई।
सिद्धक्षेत्र में ४० माताजी के विशाल संघ का पावन सान्निध्य भी प्राप्त हुआ।

आध्यात्मिक आयोजन – 'आचार्य छत्तीसी विधान'

गुरुदेव के समाधि दिवस पर बा. ब्र. तात्या भैया के निर्देशन में एवं

विधानाचार्य अंकित भैया द्वारा संगीतमय 'आचार्य छत्तीसी विधान' संपन्न हुआ। संगीतमय वातावरण ने संपूर्ण यात्रा को गुरु-भक्ति और अध्यात्म से सराबोर कर दिया।

उत्कृष्ट प्रबंधन और सेवा भावना

३५ समर्पित कार्यकर्ताओं की टीम ने रेलगाड़ी से लेकर पर्वत की चोटी तक

प्रत्येक यात्री की सुविधा सुनिश्चित की। ६ विशेषज्ञ चिकित्सकों के दल ने चौबीसों घंटे सेवाएँ प्रदान कीं।

भारतीय रेलवे खानपान और पर्यटन निगम, रेलवे बोर्ड, सिद्धायतन धर्मशाला एवं शाश्वत ट्रस्ट द्वारा उत्कृष्ट भोजन एवं आवास व्यवस्था उपलब्ध कराई गई।

सेवा का सम्मान

शांति विद्या धर्म संवर्धनी संस्था के प्रमुख बा. ब्र. तात्या भैयाजी ने मुख्य संयोजक किरीट दोशी, निदेशक मनीष जैन (सीए), राजेंद्र सेठी (सीए) एवं सहयोगियों को सम्मान पत्र एवं अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया।

गुप्त दानदाता परिवार का अनुकरणीय त्याग

इस ऐतिहासिक धर्म प्रभावना के मूल आधार एक श्रद्धेय गुप्त दानदाता श्रावक

श्रेष्ठी परिवार रहे, जिन्होंने विराट दान देकर भी अपना नाम गुप्त रखा। उनका यह त्याग आत्म-विशुद्धि और निस्वार्थ सेवा का अनुपम उदाहरण है।

'श्री विद्या समय शिखरजी यात्रा २०२६' केवल एक तीर्थयात्रा नहीं, बल्कि सेवा, समर्पण, वात्सल्य और गुरु-भक्ति का जीवंत उत्सव सिद्ध हुई।विद्या समय संस्कार सेवा फाउंडेशन ने इस सफल आयोजन हेतु सभी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोगियों के प्रति हृदय से कृतज्ञता व्यक्त की है।

मुक्तागिरी में 22 मुनियों की निर्ग्रंथ जैनेश्वरी दीक्षा : बड़ी संख्या में श्रद्धालु मुनि दीक्षा देखने पहुंचे मुक्तागिरी

बैतूल जिले के मुक्तागिरी में आचार्यश्री समयसागरजी महाराज द्वारा आचार्य बनने के बाद पहली बार 22 मुनियों को निग्रंथ जैनेश्वरी दीक्षा प्रदान की गई। प्रवक्ता अविनाश जैन विद्यावाणी ने बताया पूर्व में इस स्थान से 8 फरवरी 1998 को समाधिस्थ आचार्य श्री विद्यासागरजी द्वारा मुनि दीक्षा प्रदान की गई थी। 28 साल बाद पुनः मुक्तागिरी में यह मौका विद्या शिरोमणि आचार्यश्री समयसागर जी महाराज के गुरुवार को मुनि दीक्षा देने के रूप में आया। इस निर्ग्रन्थ मुनि दीक्षा समारोह में विदिशा नगर गौरव ऐलक कैवल्य सागर जी, ऐलक गरिष्ठ सागर जी महाराज सहित अन्य ऐलक तथा क्षुल्लक शामिल हैं। संपूर्ण भारत से ब्रह्मचारी तथा सैकड़ों की संख्या में गुरु भक्त श्रद्धालु यहां से 6 बस तथा 14 से अधिक चार पहिया वाहनों से मुक्तागिरी पहुंचे और उन्होंने दीक्षा समारोह के साथ साथ तीर्थ वंदना का भी लाभ लिया तथा संघस्थ मुनिराजों के दर्शन किए। अविनाश जैन विद्यावाणी ने बताया यह सिद्धक्षेत्र बैतूल जिले के महाराष्ट्र सीमा से लगा हुआ यह जैन सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरी है। जहां से साढ़े तीन करोड़ मुनि तपस्या करके मोक्ष को गये हैं। ऐसे तीर्थ क्षेत्र पर आचार्य गुरुदेव के जाने के दो वर्ष बाद नवाचार्य समयसागर महाराज ने ऐलक एवं क्षुल्लकों सहित 22 मुनिराजों को जैनेश्वरी दीक्षा प्रदान की। इस अवसर पर समस्त भारत से लाखों की संख्या में श्रावक एवं श्राविका उपस्थित थे। इस अवसर पर इंदौर जबलपुर आश्रम से ब्रह्मचारी एवं बहनें तथा भक्त उपस्थित थे। दीक्षा विधि का संचालन मुनि श्री प्रशस्त सागर महाराज ने किया तथा संचालन बाल ब्रह्मचारी विनय भैया बंडा ने किया।

मुनि श्री संभवसागरजी ने अपने दीक्षा के अनुभव साझा किए- इधर, विदिशा में प्रातःकाल मुनि श्री संभवसागर महाराज ने अपने दीक्षा के अनुभव को सुनाते हुए कहा कि संघ में तो मेरा प्रवेश 1996 सिद्धक्षेत्र गिरनार जी में हो गया था लेकिन, जैनेश्वरी दीक्षा 22 अप्रैल 1998 को 23 दीक्षाओं के साथ हुई। उन्होंने उस समय के परिणामों को साझा करते हुए कहा कि आचार्य गुरुदेव ने मंच से कहा कि यह मोक्ष मार्ग बहुत कठिन है। अभी भी आप लोग विचार कर सकते हैं। एक बार इस मार्ग पर आने के बाद घर, परिवार अथवा माता-पिता की याद नहीं आना चाहिए कि घर पर तो मेरी मां रोज गरम-गरम रोटी सेककर खिलाती थी। यहां ठंडा मिलेगा और मिलेगा कि नहीं मिलेगा कुछ भी निश्चित नहीं। अभी भी समय है आप लोगों ने जो निवेदन किया है, एक बार और विचार कर लीजिए सभी दीक्षार्थियों ने एक स्वर में कहा कि गुरुदेव हमने आपकी पाठशाला में प्रवेश किया है। अब कभी पीछे मुढ़कर नहीं देखेंगे। आप हमें जैनेश्वरी दीक्षा प्रदान कीजिए। समाज की तथा सभी के माता-पिता की स्वीकृति के बाद गुरुदेव उठे और प्रत्येक दीक्षार्थी के पास प्रत्यक्ष में जाकर उनके मस्तिष्क पर मंत्रोच्चारण के साथ दीक्षा की संपूर्ण विधि को संपादित किया।

गुरुदेव की पाठशाला में प्रवेश के लिए परीक्षा कठिन- मुनि श्री ने कहा कि जब गुरुदेव मेरे सामने आकर खड़े हुए तो ऐसा लगा कि संसार की सबसे कीमती वस्तु मुझे मिल गई है। में बहुत ही अभिभूत था और जब गुरुदेव ने मेरे सिर पर दीक्षा की क्रियाएं संपन्न की तो मुझे ऐसा लगा कि संसार की सबसे अनमोल चीज मिल गई हो। मुनि श्री ने कहा कि प्रत्येक दीक्षार्थी के सिर पर ओम तथा स्वास्तिक बनाकर पांच महाव्रतों के साथ 28 मूलगुण का केसर तथा लौंग आदि के माध्यम से आरोहण किया जाता है। मुनि श्री ने कहा कि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज इस युग के महान संत थे। जिन्होंने पचास वर्ष से अधिक संयम के पूर्ण किए ऐसे महान गुरु के पाद मूल में बैठकर उनके शिष्य बनने का दुर्लभ सौभाग्य मिला। मुनि श्री ने कहा कि यूपीएससी का एग्जाम करना तो सरल है, लेकिन गुरुदेव की पाठशाला में प्रवेश पाना बहुत कठिन है। उन्होंने कहा कि गुरुदेव की पाठशाला में प्रवेश के लिए कितनी बार परीक्षा देना होती है। कई लोगों को तो वर्षों तक प्रतीक्षा करना होती है।

24 फरवरी 2026 को श्री पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र लागौन (ललितपुर) उत्तर प्रदेश में शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष के संबंध में हुई मिटिंग

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष कमेटी के चेयरमैन श्री जवाहर लाल जैन, सिकन्द्राबाद एवं उत्तर प्रदेश उत्तराखण्ड अंचल की प्रचार मंत्री श्रीमती मीनू जैन, गाजियाबाद ललितपुर उत्तर प्रदेश महिला सम्भाग की अध्यक्ष श्रीमती अनिता जैन मोदी, महामंत्री श्रीमती अनुपमा जैन बजाज तथा अन्य सदस्यों श्रीमती स्वाती जैन आदि के साथ श्री पार्श्वनाथ अतिशय दिगम्बर जैन मन्दिर लागौन जी में मिटिंग की। जिसमें महिला सम्भाग की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए तथा अधिकाधिक महिलाओं को तीर्थों के उद्धार, संरक्षण, संवर्द्धन में घर-घर को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी से जोड़ने के लिए अधिकाधिक महिलाओं के साथ-साथ परिवार व समाज के सहयोग आदि विशयों पर चर्चा कर आगामी योजनाओं तथा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के शतकोतर रजत वर्ष समारोह में महिला सम्भाग ललितपुर की भूमिका की निर्धारण आदि पर विचार किया।

प्राचीन अतिशय क्षेत्र लागौन में निर्यापक मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महामुनिराज की भव्य आगवानी एवं उनके सान्निध्य में होने वाली श्रीजी की ऐतिहासिक विमान यात्रा में प्रतिभागिता की यहां विचारणीय बिन्दु यह है कि की सभी श्रमण एवं श्रावकगणों का उतरदायित्व है कि सभी मिलकर तीर्थों के ऐतिहासिकता को बनाए रखते हुए उनके संरक्षण, संवर्द्धन और विकास का कार्य करें।

उत्तर प्रदेश के ललितपुर शहर से लगभग 21 किलोमीटर दूर ग्राम सिरोन में स्थित प्राचीन प्रसिद्ध अतिशय क्षेत्र सेरोन जी क्षेत्र देवाधिदेव 1008 भगवान शांतिनाथ को समर्पित क्षेत्र अवस्थित है। यहां शांतिनाथ भगवान की लगभग 05 मीटर ऊंची भव्य खड्गासन प्रतिमा मुख्य मन्दिर में स्थापित है। यह स्थान अपनी ऐतिहासिक धरोहर एवं कलात्मक मूर्तियों के लिए जाना जाता है। यह अत्यधिक प्राचीन सिद्धक्षेत्र है जहां खुदाई के दौरान अक्सर जैन तीर्थकरों की प्रतिमाएं प्राप्त होती रहती है। यहां के जिनालयों में खजुराहो और देवगढ़ जैसे कलात्मक प्रतिमाएं स्थापित है। वास्तुकला के अनुसार भी यह क्षेत्र में अत्यधिक मनोहर है। यहां एक अतिशयकारी प्राचीन कुआं भी है।

किवदंतियों के अनुसार इस कुएं से श्रावकों को इच्छानुसार वस्तुएं प्राप्त होती थी।

वर्तमान में निर्यापकाचार्य मुनिपुंगव सुधासागर जी महाराज के सान्निध्य

में पंचकल्याणक का कार्य चल रहा है। निर्मित वर्तमान वेदिया स्वर्णकार्य से युक्त अत्यधिक मनोहारी है। यहां भोजनशाला, संतशाला ठहरने आदि की अत्यधिक प्रशसनीय व्यवस्था व्यवस्थापकों द्वारा की गई है।

णमोकार तीर्थ में 7 मुनिराजों को मिला आचार्य और 6 माताजी को गणिनी पद : चांदवड स्थित प्रसिद्ध णमोकार तीर्थ में आस्था, श्रद्धा और भक्ति का अटूट क्षण देखने में आया

महाराष्ट्र के चांदवड स्थित प्रसिद्ध णमोकार तीर्थ में पंचकल्याणक महोत्सव की अभूतपूर्व सफलता के बाद शनिवार को एक बार फिर स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाने वाला ऐतिहासिक क्षण देखने को मिला। गणधराचार्य कुंथूसागरजी महाराज की प्रेरणा, आचार्य श्री देवनंदीजी और आचार्य श्री सुविधीसागरजी के सान्निध्य में 7 मुनिराजों को आचार्य एवं 6 आर्यिका माताजी को गणिनी पद प्रदान करने का संस्कार समारोह हुआ। इस अवसर पर आचार्य श्री पद्मनंदीजी, आचार्य श्री कुमुदनंदीजी, आचार्य श्री कर्मविजयनंदीजी, आचार्य श्री वीरनंदीजी तथा बालब्रह्मचारी वैशाली दीदी सहित अनेक साधु-साध्वियों की उपस्थिति रही। शनिवार सुबह 7.30 बजे से समारोह का शुभारंभ हुआ। मंत्रोच्चार और जयघोष के वातावरण में दीक्षार्थियों को उच्च पदों पर प्रतिष्ठित किया गया। णमोकार तीर्थ में 6 से 13 फरवरी के दौरान पंचकल्याणक महोत्सव किया गया था। इसके बाद शनिवार को हुए इस पदग्रहण समारोह ने उपस्थित श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। इन साधु-साध्वियों को मिला नया पदभार विभूषण आचार्य श्री देवनंदीजी महाराज संघ के शिष्य मुनिश्री पावनकीर्ति जी, मुनिश्री अमोघकीर्ति जी, मुनिश्री अमरकीर्ति जी, मुनिश्री जयकीर्ति जी, मुनिश्री सकलकीर्ति जी, मुनिश्री शुभमकीर्ति जी और मुनिश्री आर्षकीर्ति जी इन सात मुनिराजों को आचार्य पद प्रदान किया गया। इसी प्रकार कीर्तिश्री माताजी, सुयोगमती माताजी, सम्यकश्री माताजी, स्वस्तीश्री माताजी, सुज्ञानश्री माताजी और प्रज्ञानश्री माताजी, छह माताजी को गणिनी पद से विभूषित किया गया।

तीर्थों की सुरक्षा के लिये योगदान

अंतिम सांस तक होना चाहिये - आचार्य श्री विमर्श सागर

जनगणना के समय धर्म के कॉलम में केवल 'जैन' ही लिखना

'आज हमारे विमुख होने के कारण तीर्थ यत्र-तत्र बिखरे दिखाई पड़ रहे हैं, जो स्वयं तीर्थ को करने वाले हैं, वो ही तो तीर्थंकर होते हैं। इनके कल्याणक क्षेत्र वाले तीर्थों की भी रक्षा करो। आप सब भी तीर्थों की रक्षा के लिये हमेशा अपना योगदान करके कर्तव्य का बखूबी पालन करें, प्रतिवर्ष आप सभी का कुछ न कुछ योगदान तीर्थों के लिये होना ही चाहिये,' यह कहते हुये आचार्य श्री विमर्श सागरजी ने बड़ौत के आदिनाथ धर्म तीर्थ प्रवर्तन पर्व - जिनागम पंथ दिवस (13 फरवरी) के अवसर पर खचाखच भरे सभागार में तीर्थ सुरक्षा की आवश्यकता आज के समय को देखते हुए जन-जन से कही।

वहां उपस्थित भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन, शतकोत्तर रजत वर्ष के चेयरमैन जवाहरलाल जैन और चैनल महालक्ष्मी द्वारा तीर्थ सुरक्षा में तथा विवादों को सुलझाने की बढ़-चढ़ कर पहल की बातों पर संकेत करते हुए आचार्य श्री ने कहा कि "जैसे आप अपने बच्चों के लिए, जब तक वे योग्य नहीं हो जाते, उनके लिये उचित प्रबंधन करते रहते हैं, उसी प्रकार तीर्थ प्रबंधन के लिए भी आपका योगदान होना चाहिए। मेरा आप सभी को, तीर्थक्षेत्र कमेटी को पूरा आशीर्वाद है।"

तीर्थक्षेत्र कमेटी अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन ने कहा कि आज हमारे प्राचीन तीर्थों की हालत कैसी है, यह किसी से छिपी नहीं है, पर हम नहीं जागते। न ही तीर्थों की रक्षा के प्रति सचेत होते है जैसे अपने घरों की रक्षा करते हैं, वैसे अपने तीर्थों की रक्षा क्यों नहीं करते। आजकल तो तीर्थयात्रा भी पिकनिक की तरह हो गई है। आज जैसे हर कार्य के लिये अर्थ की आवश्यकता होती है, वैसे ही तीर्थों के लिए तन मन और धन की आवश्यकता है मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आपके पैसे का उपयोग तीर्थों के जीर्णोद्धार पर ही लगेगा। तीर्थ बचेंगे, तो संस्कृति बचेगी। संस्कृति बचेगी, तो संस्कार बचेंगे। हमारी और आपकी पहचान बचेगी।

सही गणना प्राप्त होने पर ही हम सरकार पर अपना दवाब बना सकते हैं जिससे हम ओर हमारे तीर्थों की सही से रक्षा हो सकेगी।जनगणना पर स्पष्ट करते हुए कहा कि धर्म के कॉलम में केवल 'जैन' ही लिखना है।

संस्कारों से ही तीर्थों की सुरक्षा हो पायेगी - आचार्य श्री सौरभ सागरजी

अतिशय क्षेत्र श्री दिगंबर जैन लाल मंदिर के श्री 1008 इतिहास में 432 वर्षों के पश्चात मज्जिनेन्द्र त्रिकाल चौबीसी जिनबिम्ब ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव रविवार 15 फरवरी को लाल मंदिरजी के सामने लालकिला मैदान में गणिनी आर्यिका श्री चन्द्रमति माताजी की प्रेरणा से आचार्य श्री श्रुतसागरजी एवं आचार्य श्री सौरभ सागरजी के मंगल सान्निध्य में प्रारंभ हुआ। पंचकल्याणक की भव्य शुरूआत श्री लाल मंदिर जी से भगवान को इन्द्रों द्वारा पालकी में विराजमान कर 108 भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबू जम्बू प्रसाद जैन सपरिवार द्वारा ध्वजारोहण से हुआ।

जन्म कल्याणक के दिन 17 फरवरी को पाण्डुकशिला जन्माभिषेक से पूर्व तीर्थों की सुरक्षा पर जागरूकता के लिये भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा कार्यक्रम किया गया। इस अवसर पर आचार्य श्री श्रुतसागरजी ने तीर्थों की सुरक्षा में पूर्ण सहयोग तथा तीर्थक्षेत्र कमेटी से जुड़कर तीर्थों के जीर्णोद्धार के लिए पूरी तरह समर्पित रहने की बात दोहराई।

आचार्य श्री सौरभ सागरजी ने कहा कि जैन समाज में उत्सव तो बहुत होते हैं, पर उत्साह नहीं होता। जहां-जहां तीर्थंकर हुए या प्रतिमायें धरा से निकली, कल्याण-सिद्ध भूमि सब तीर्थों में परिवर्तित हो चुके हैं, आप देखते हो भारत की धरती पर कही भी खुदाई करते हो, तो सबसे प्राचीन से प्राचीन कोई स्थापत्य कला की चीज निकली है, वो जैन मूर्तियों के रूप में निकलती है, अन्य किसी रूप में नहीं। इसलिये क्षेत्रों की कमी नहीं है, पर सुरक्षा कौन करेगा? जो अपने अंदर संस्कार पैदा कर लेंगे। सिद्ध-अतिशय - कल्याणक - कला क्षेत्र, बहुत तीर्थ हैं जैनों के। साल में जरूर एक बार ऐसे तीर्थों की वंदना करो, जंगल वाले तीर्थों की यात्रा करो। नई पीढ़ी आज जरूर मस्ती में है, पर धर्म की बसदि में नहीं है। धर्म के प्रति उपेक्षा मत करो, तीर्थों की आराधना करो, सुरक्षा करो। तीर्थक्षेत्र कमेटी से जुड़ो, उसके हाथ मजबूत करो।

आचार्य श्री विमर्श सागरजी के सुशिष्य मुनि श्री विशम सागरजी ने कहा कि जीर्णोद्धार के लिए सहयोग की बात। सहयोग की भावना होनी ही चाहिए, चिंतन होना चाहिए तभी तीर्थों को बचा सकते हैं। अगर उत्साह की जगह निराशा आ गई, तो बचाना मुश्किल है।

श्रीमती मीनू जैन ने बताया कि अगर सबसे प्राचीन कोई जैन संस्था है, तो वह भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी है, जो अब अपने 125 वर्ष पूरे कर रही है, उस कमेटी के चेयरमैन श्री जवाहर लाल जैन हैं व श्री पुनीत जैन दरियागंज दिल्ली प्रदेश के चेयरमैन तथा श्री नीरज जैन दिगम्बर संयोजक पद पर आरोदित किया गया हैं। सभी तीर्थक्षेत्र कमेटी का हर संभव सहयोग करें। तीर्थों की सुरक्षा में सहभागी बने।

चैनल महालक्ष्मी शरद जी से ने पहले दोनों आचार्यों के सम्मुख, प्रतिष्ठाचार्यों व उपस्थित मंदिर कमेटियों से अपील की कि आप कोई भी बड़ा कार्यक्रम, जैसे विधान या पंचकल्याणक या चातुर्मास करवाते हैं, तो एक तीर्थ सुरक्षा कलश की स्थापना जरूर करें, उससे जो भी राशि आये, उसे प्राचीन तीर्थों के जीर्णोद्धार के लिये भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को जमा करायें। पांच सिद्धभूमियों को प्रदर्शित करते ऐसे आकर्षक कलश तीर्थक्षेत्र कमेटी तैयार करवा रही है, जल्द ही आप उचित समय रहते हुए, उनसे मंगवा सकते हैं। आप अपने-अपने मंदिर में तीर्थ सुरक्षा गुल्लक भी रखवायें, जो तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा मंदिरों में नि:शुल्क दी जा रही है। प्राचीन तीर्थों की यात्रायें करें और तन-मन-धन किसी भी रूप में तीर्थक्षेत्र कमेटी को आर्थिक रूप से मजबूत करें।

परिसर में तीर्थों के जीर्णोद्धार व सुरक्षा के लिए जागरूक करने के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा एक स्टाल भी लगाया गया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की तीर्थ चक्रवर्ती योजना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के 125 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष समारोह के अवसर पर तीर्थक्षेत्र कमेटी को आर्थिक दृढ़ता प्रदान करने उद्देश्य की पूर्ति हेतु 1 लाख रूपए की राशि प्रदान करने वाले महानुभावों को तीर्थ चक्रवर्ती पद से सुशोभित किया जा रहा है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी से सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण] संवर्द्धन सुरक्षा तथा व्यवस्था को सुदृढ़ होना अत्यन्त आवश्यक है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अधिक से अधिक श्रावकों धर्म प्रेमियों तथा तीर्थ रक्षकों को तीर्थक्षेत्र कमेटी से मन से जुड़ने की अत्यधिक आवश्यकता है।

इन महानुभावों के द्वारा तीर्थ रक्षा हेतु 1 लाख रूपए का प्रदत्त अनुदान के संबंध में उन्हें तीर्थरक्षक चक्रवर्ती पद प्रदान कर सम्मानित किया गया। निश्चित ही प्राप्त राशि तीर्थों की रक्षा, विकास और व्यवस्थाओं लिए व्यय की जाएगी ऐसा आपको विश्वास दिलाते है।

तीर्थ चक्रवर्ती योजना कमेटी को आर्थिक रूप से सुदृढ़ तो बनाएगी ही साथ ही समाज के प्रत्येक वर्ग को तीर्थो की रक्षा और विकास से जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन भी करेगी।

जो सज्जन अब तक निम्नलिखित 'तीर्थ चक्रवर्ती' पद सुशोभित कर चुके है उनका परिचय निम्न प्रकार से है

श्रीमान राजेश जैन, पुष्पांजलि
नई दिल्ली

श्रीमान विजय जैन
अहमदाबाद

श्रीमान सुशील जैन, मोदी नगर

श्रीमान नीरज जैन दिगम्बर, दिल्ली

श्री पुनीत जैन, दिल्ली

श्री प्रदीप जैन, पी.एन.सी., आगरा

श्रीमान प्रभात जैन सेठी, गिरिडीह

श्रीमान हेमचन्द जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली

श्री अशोक दोशी, मुम्बई

श्रीमती मीनू जैन, गाजियाबाद

श्री जय कुमार जैन, कोटा

श्री जवाहर लाल जैन, सिकन्द्राबाद

श्री कमल जैन, पलवल

श्री अमित जैन कासलीवाल, इन्दौर

श्री संतोष जैन घड़ी, सागर

श्री संजय जैन पापड़ीवाल, औरंगाबाद

श्रीमान शरद जैन, सांध्य महालक्ष्मी, दिल्ली

श्री राजीव जैन, रानी पालिमर्स

श्री जीवन प्रकाश जैन, हस्तिनापुर

श्रीमान विनोद जैन बाकलीवाल, मैसुर

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष महोत्सव

स्थान :- अंतिम केवली श्री 1008 जम्बू स्वामी दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, मथुरा चौरासी (उत्तर प्रदेश)

बुधवार-गुरुवार, 21-22 अक्टूबर 2026

जम्बूप्रसाद जैन	संतोष पेंढारी	जवाहर लाल जैन	प्रदीप जैन, PNC
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	चेयरमैन स्थापना वर्ष समिति	चेयरमैन स्थापना वर्ष महोत्सव
9810180510	9822225911	9411245100	9837056653

उपाध्यक्ष
श्री सुरेशचन्द जैन टी.एम.यू., मुरादाबाद, 9412234730
श्री प्रदीप कुमार जैन, पी.एन.सी, आगरा, 9837056653
श्री विजय जैन, अहमदाबाद, 9825007495
श्री नीलम जैन अजमेरा, उस्मानाबाद, 9422070319
श्री संजय पापड़ीवाल, औरंगाबाद 9430688133

कोषाध्यक्ष
श्री अशोक जैन दोशी, मुम्बई 9820430114

मंत्री
श्री हसमुख जैन गांधी, इन्दौर 9302103513
डा. जीवन प्रकाश जैन, हस्तिनापुर 9411025124
श्री वीरेश जैन सेठ, जबलपुर 9630888771
श्री जयकुमार जैन कोटा वाले, लखनऊ 9414068250

आंचलीय अध्यक्ष
श्री पारस जैन बज, अहमदाबाद गुजरात 9054518039
श्री विनोद जैन बाकलीवाल, मैसूर कर्नाटक 9900420001
श्री मिहिर बाहुबली जैन गांधी, अकलूज महाराष्ट्र 9900420001
श्री डी.के.जैन, इन्दौर, मध्यांचल 9827096093
श्री कन्हैयालाल जैन सेठी, औरंगाबाद पूर्वांचल 9431223893
श्री राजकुमार जैन कोठारी, जयपुर राजस्थान 9414048432
श्री जवाहर लाल जैन, सिकन्द्राबाद उत्तर प्रदेश-उत्तराखण्ड 9411245100
श्री संजय जैन ठोलिया, पौण्डिचेरी तमिलनाडु 9443616595
श्री प्रद्युमन आर जैन, दिल्ली, 9811221008

13 मार्च 2026

आदरणीय मान्यवर,
सादर जय जिनेन्द्र!

विषय:- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के "शतकोत्तर रजत स्थापना महोत्सव वर्ष" के संबंध में।

आशा है आप एवं आपका समस्त परिवार सकुशल होंगे। अत्यंत हर्ष के साथ निवेदन है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का "शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष महोत्सव" दिनांक 22 अक्टूबर 2026 से 22 अक्टूबर 2027 तक आयोजित किया जा रहा है। इसी संदर्भ में एक चिंतन बैठक का आयोजन दिनांक 10 मई 2026 को अयोध्या तीर्थक्षेत्र में किया जा रहा है।

यह महोत्सव तीर्थक्षेत्र कमेटी के स्वर्णिम एवं गौरवशाली 125 वर्ष के इतिहास, उसकी उपलब्धियों तथा भावी योजनाओं पर विचार-विमर्श का एक महत्वपूर्ण अवसर है। इस चिंतन बैठक में आपकी गरिमामयी उपस्थिति, अनुभव, सुझाव एवं मार्गदर्शन "शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष महोत्सव" को सार्थक, भावशाली एवं प्रेरणादायी बनाने में दिशा प्रदान करेंगे। हमें इस अवसर पर यह भी विचार करना है कि अपनी 125 वर्ष की समृद्ध विरासत को आगामी पीढ़ी को किस प्रकार से हस्तांतरित किया जाए।

इस पावन अवसर पर देवाधिदेव 1008 श्री आदिनाथ, श्री अजितनाथ, श्री अभिनन्दननाथ, श्री सुमतिनाथ एवं श्री अनन्तनाथ भगवान की जन्मभूमि के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होगा। साथ ही परम पूज्य गणिनी प्रमुख 105 आर्यिकारत्न ज्ञानमती माताजी ससंघ के आशीर्वाद तथा नवनिर्मित राम मंदिर के दर्शन का भी सुअवसर प्राप्त होगा।

अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि कृपया इस बैठक में पधारकर अपनी उपस्थिति द्वारा आयोजन को सफल बनाने में सहयोग प्रदान करें। कृपया अपने आगमन की सूचना दिनांक 30 अप्रैल 2026 तक निम्नांकित संपर्क सूत्रों पर प्रदान करने का कष्ट करें, जिससे आपके आवास एवं अन्य व्यवस्थाओं की समुचित व्यवस्था की जा सके।

सम्पर्क सूत्र :- श्री जीवन प्रकाश जैन राष्ट्रीय मंत्री 9411025124
श्रीमती मीनू जैन 7078548210, श्री पीयूष जैन 7217756871

सादर निवेदक।

(जम्बू प्रसाद जैन)	(संतोष जैन पेंढ़ारी)	(जवाहर लाल जैन)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	चेयरमैन

प्रधान कार्यालय : द्वितीय तल, हीराबाग, कस्तूरबा गांधी चौक, सी.पी. टैंक मुम्बई - 400004 मो.: 9833671770, 9109228683 | Mail : tirthvandana4@gmail.com
कार्यालय : PNC INFRASTRUCTURE LIMITED, PNC HOUSE DELHI ROAD, AGRA MOB: 963909555, 7217756871 | Mail : pkjain@pncinfratech.com

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई
की प्रेरणा से
दि. जैन तीर्थ निर्देशिका प्रकाशन समिति, इन्दौर
द्वारा प्रवर्तित
दिगम्बर जैन तीर्थों हेतु 3 विशिष्ट पुरस्कार

प्रायोजक : श्री हंसमुख जैन गॉधी, राष्ट्रीय मंत्री – तीर्थक्षेत्र कमेटी, इन्दौर

पुरस्कारों की विषय परिधि निम्नवत् हैः-

श्रेष्ठ तीर्थ प्रबन्धन हेतु – क्षेत्र पर सौन्दर्यीकरण, स्वच्छता, भोजन एवं सम्यक् आवासीय सुविधाओं के विकास एवं शासकीय अभिलेखों के सम्यक् संधारण हेतु।

श्रेष्ठ तीर्थ विकास हेतु – क्षेत्र के प्राचीन जिन मंदिरों के जीर्णोद्धार एवं पुरातत्व के संरक्षण तथा नवनिर्माण एवं विकास कार्यों हेतु।

श्रेष्ठ तीर्थ प्रचार हेतु – क्षेत्र के प्रचार – प्रसार, प्रकाशन एवं सोशल मीडिया प्रबन्धन हेतु।

प्रत्येक पुरस्कार के अन्तर्गत क्षेत्र को रू. १,११,०००/०० की सम्मान राशि, शाल, श्रीफल एवं प्रशस्ति प्रदान की जायेगी। क्षेत्र के वर्तमान पदाधिकारियों को निर्धारित प्रपत्र पर सप्रमाण आवेदन करना होगा। एक से अधिक वर्ग में आवेदन करने पर पृथक–पृथक संलग्नकों सहित फॉर्म भरने होंगे। क्षेत्र का भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी से सम्बद्ध होना अनिवार्य है।

पुरस्कारों का निर्णय निम्नांकित निर्णायक मंडल द्वारा किया जायेगा।

1. श्री हंसमुख जैन गॉधी, इन्दौर, प्रायोजक एवं अध्यक्ष
2. श्री एन. के. सेठी, (I.A.S.) जयपुर, सदस्य
3. न्यायमूर्ति विमला जैन, भोपाल, सदस्य
4. डॉ. अनुपम जैन, इन्दौर, संयोजक

निर्धारित प्रारूप में प्रविष्टियॉ सादर आमंत्रित हैं। प्रविष्टि प्राप्त होने की अन्तिम तिथि–३१.०३.२६ है।

हंसमुख जैन गॉधी
अध्यक्ष
93021 03513
hasmukhjaingandhi@gmail.com

डॉ. अनुपम जैन
महामंत्री
95898 83822
anupamjain3@rediffmail.com

कार्यालय सम्पर्क – 211, देवधर काम्पलेक्स, छावनी, इन्दौर 452001, मो. 93021 03513

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2025-27
Jain Tirth vandana, English-Hindi March 2026
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2025-27
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printer, Publisher and Editor UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004. Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 Dadarkar Building, V P Road, C P Tank, MUMBAI-400 004 . Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004.